MATS UNIVERSITY

NAAC GRADE A+ ACCREDITED UNIVERSITY

MATS CENTRE FOR DISTANCE & ONLINE EDUCATION

हिंदी भाषा

Bachelor of Science (B.Sc.)
Semester - 3

SELF LEARNING MATERIAL

MATS UNIVERSITY
www.matsuniversity.ac.in
NAAC GRADE A+ ACCREDITED UNIVERSITY

BACHELOR OF SCIENCE
(B.Sc)

HINDI Bhasha

CODE:ODL/MSS/BSCB/AEC301

विषय सूची		
खंड 1		
इकाई 1	स्वतंत्रता प्राप्ति	1
इकाई 2	संज्ञा, सर्वनाम	14
इकाई 3	पल्लवन	23
खंड 2		
इकाई 4	बड़े घर की बेटी	29
इकाई 5	मुहावरे और लोकोक्तियाँ	35
इकाई 6	तत्सम और तद्भव शब्द	41
खंड 3		
इकाई 7	अब तो पथ यही है	47
इकाई 8	अशुद्धियाँ और उनका संशोधन	53
इकाई 9	उपसर्ग, प्रत्यय एवं वाक्य के भेद	60
खंड 4		
इकाई 10	रीढ़ की हड्डी	67
इकाई 11	समास विग्रह	73
इकाई 12	विराम चिन्हों का प्रयोग	79
इकाई 13	संक्षिप्तीकरण	84
खंड 5		
इकाई 14	मानक भाषा	90
इकाई 15	पर्यायवाची शब्द	96
इकाई 16	पत्र लेखन	103
इकाई 17	अपठित गद्यांश	110
शब्दकोष		

COURSE DEVELOPMENT EXPERT COMMITTEE

1. Prof. (Dr.) K. P. Yadav, Vice- Chancellor, MATS University, Raipur, Chhattisgarh
2. Dr. Ashish Saraf, Professor & Head, School of Sciences, MATS University, Raipur, Chhattisgarh
3. Dr. K.K. Shukla, Professor SoS, Biotechnology, Pt. Ravishankar Shukla University Raipur, Chhattisgarh
4. Mr. Ashok Tembhre Earth Biotech., Raipur, Chhattisgarh

COURSE COORDINATOR

Prof.(Dr.) Kamlesh Gogiya, Hindi Department , MATS University Raipur Chhattisgarh

COURSE /BLOCK PREPARATION

Prof.(Dr.) Reshma Ansari, HOD Hindi Department , MATS University Raipur Chhattisgarh

March, 2025

ISBN-978-93-47661-12-9

@MATS Centre for Distance and Online Education, MATS University, Village- Gullu, Aarang, Raipur-(Chhattisgarh)

All rights reserved. No part of this work may be reproduced or transmitted or utilized or stored in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from MATS University, Village- Gullu, Aarang, Raipur-(Chhattisgarh)

Printed & Published on behalf of MATS University, Village-Gullu, Aarang, Raipur by Mr. Meghanadhudu Katabathuni, Facilities & Operations, MATS University, Raipur (C.G.)

Disclaimer-Publisher of this printing material is not responsible for any error or dispute from contents of this course material, this is completely depends on AUTHOR'S MANUSCRIPT.
Printed at: The Digital Press, Krishna Complex, Raipur-492001(Chhattisgarh)

Acknowledgement

The Material (Pictures and images) we have used is purely for educational purpose. Every effort has been made to trace the copyright holders of material reproduced in this book. Sould any infringement have occurred, the publishers and editors apologize and will be pleased to make the necessary corrections in future of this book.

खंड-1

हिंदी भाषा

इकाई-1: स्वतंत्रता पुकारती

संरचना

1.1. परिचय

1.2. उद्देश्य

1.3. दासता का दौर: भारत पर हुए अत्याचार और स्वतंत्रता की आवश्यकता

1.4. क्रांतिकारी व राष्ट्रवादी विचारधाराएँ – वैचारिक पृष्ठभूमि और प्रभाव

1.5. युवाओं के लिए स्वतंत्रता का संदेश – "स्वतंत्रता पुकारती" का वर्तमान संदर्भ

1.6. सारांश

1.7. अभ्यास

1.8. सन्दर्भ एवं अनुशंषित पठन सामग्री

1.1. परिचय

स्वतंत्रता मानव जीवन का चरम मूल्य है—एक ऐसा मूल्य, जिसकी रोशनी में मानव-अस्तित्व का स्वाभिमान, विचारों की स्वाधीनता और जीवन जीने का अधिकार पुष्पित-पल्लवित होता है। "स्वतंत्रता पुकारती" केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि एक चेतना-ध्वनि है—एक अनन्त उद्घोष, जो युगों-युगों से मानव मन को अन्याय, दासत्व और अधीनता की बेड़ियों को तोड़ने की प्रेरणा देता आया है। यह पुकार केवल इतिहास के पन्नों में दर्ज नहीं, बल्कि आज भी समय के आकाश में गूँजती हुई हमें भीतर से हिलाती है, झकझोरती है और सक्रिय होने का आह्वान करती है।

भारत की स्वतंत्रता-यात्रा इस सत्य का जीवंत उदाहरण है कि स्वतंत्रता शब्द मात्र राजनीतिक परिभाषा तक सीमित नहीं; यह आत्मिक मुक्ति, वैचारिक आज़ादी, सांस्कृतिक अस्मिता और मानवीय गरिमा का पर्याय है। जिस

क्षण किसी राष्ट्र अथवा व्यक्ति के स्वत्व, स्वाभिमान, और स्वचेतना को परतंत्रता का स्पर्श होता है, उसी क्षण स्वतंत्रता की पुकार अंतर्यामी शंख-ध्वनि बनकर उठती है। इस पुकार के केंद्र में है—मनुष्य का अदम्य साहस, प्रतिरोध की क्षमता और सत्य-धर्म की रक्षा का संकल्प।

"स्वतंत्रता पुकारती" विषय पर प्रस्तुत यह साहित्यिक रचना, स्वतंत्रता की ऐतिहासिक, वैचारिक, सांस्कृतिक और समकालीन व्याख्या को समेटने का एक सूक्ष्म प्रयास है। इसका उद्देश्य है—स्वतंत्रता की प्रासंगिकता को मात्र 15 अगस्त 1947 तक सीमित न मानकर, उसे आज के सामाजिक, वैचारिक और नैतिक परिप्रेक्ष्य में पुनर्स्थापित करना। क्योंकि स्वतंत्रता केवल अर्जित नहीं होती—उसका संरक्षण, संवर्धन और संस्कार प्रत्येक पीढ़ी का कर्तव्य है। आज जब मानवीय चेतना पर नए-नए प्रकार की दासताएँ—मन की दासता, विचारों की गुलामी, तकनीकी पराधीनता, उपभोक्तावाद और नैतिक पतन—छा रही हैं, तब स्वतंत्रता पुनः हमें पुकारती है कि हम जागें, विचारें और अपने मूल्यों की रक्षा करें।

1.3. दासता का दौर: भारत पर हुए अत्याचार और स्वतंत्रता की आवश्यकता

भारतीय इतिहास में परतंत्रता का अध्याय एक ऐसी पीड़ादायी कथा है, जिसमें स्वर्णिम सभ्यता के गौरव पर विदेशी शासन के अंधकार ने अपने निशान गहरे अंकित किए। भारत, जो कभी ज्ञान-विज्ञान, आध्यात्मिकता, व्यापार और संस्कृति का जाज्वल्य मानक था, उसी की दुर्बलताओं का लाभ उठाकर विदेशी शक्तियों ने उसे धीरे-धीरे आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और मानसिक रूप से क्षीण करने का प्रयास किया। दासता केवल शासन परिवर्तन का परिणाम नहीं थी, बल्कि राष्ट्रीय अस्मिता पर आघात, स्वदेशी गौरव का हनन और भारतीय चेतना को पराजित करने का षड्यंत्र था।

विदेशी शासन ने भारत की प्राचीन समृद्धि, आत्मनिर्भरता और आत्मगौरव की नींव को क्षत-विक्षत करने में कोई कसर न छोड़ी। व्यापारिक एकाधिकार के नाम पर औपनिवेशिक शक्तियों ने भारत की आर्थिक संरचना को तोड़ते हुए उसे कच्चे माल का आपूर्तिकर्ता और तैयार वस्तुओं का उपभोक्ता

बना दिया। इस शोषण ने किसानों को निर्धन, कारीगरों को बेरोज़गार और भारतीय उद्योगों को रसातल में पहुँचा दिया। वस्त्र उद्योग, जो भारतीय गर्व का प्रतीक था, नष्ट कर दिया गया ताकि इंग्लैंड की मिलों का बाजार यहाँ सुदृढ़ हो सके। दासता का यह आर्थिक शोषण मानो उस विष का प्रथम घूँट था, जिसने धीरे-धीरे समाज के प्रत्येक अंग में अपाहिजता फैलानी शुरू की।

परंतु परतंत्रता केवल आर्थिक नहीं थी; वह मानसिक और सांस्कृतिक दासता के रूप में भी भारतीय समाज पर थोप दी गई। अंग्रेज़ी शिक्षा और पाश्चात्य जीवन-शैली के प्रसार ने भारत की आत्मा—उसकी भाषा, संस्कृति और परंपराओं—को कमतर सिद्ध करने का प्रयास किया। भारतीय जनमानस में हीनता की भावना भरकर उसे भूलाने की चेष्टा की गई कि भारत कभी "विश्वगुरु" रहा है। यह दासता का सबसे घातक रूप था, क्योंकि जब मन गुलाम हो जाए, तब बाहरी बेड़ियाँ स्वतः स्थायी हो जाती हैं।

किन्तु इसी अंधकार के गर्भ से स्वतंत्रता की ज्योति प्रस्फुटित हुई। अन्याय, अत्याचार और शोषण का यह दौर भारतीय आत्मा को तोड़ नहीं सका; उल्टे, उसने उसे जाग्रत किया। भारत ने अनुभव किया कि यदि अस्तित्व, संस्कृति और सम्मान की रक्षा करनी है, तो स्वतंत्रता आवश्यक है—स्वतंत्रता, जो केवल राजनीतिक मुक्ति नहीं बल्कि आत्मसम्मान की पुनर्स्थापना का नाम है। यही वह क्षण था, जब स्वतंत्रता की पुकार स्वरों में नहीं, बल्कि हृदयों में गूँजने लगी।

महान स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान (संक्षिप्त विश्लेषणात्मक चित्रण)

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की सफलता किसी एक व्यक्तित्व का परिणाम नहीं, बल्कि विविध नेतृत्व शैलियों और विचारधाराओं का सामूहिक समन्वय थी। प्रत्येक महापुरुष ने अपनी विशिष्ट संवेदना, विचार, त्याग और नेतृत्व के माध्यम से स्वतंत्रता दिशा में अमिट योगदान दिया।

महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता आंदोलन को नैतिकता, सत्य और अहिंसा का अद्वितीय आधार प्रदान किया। सत्याग्रह, असहयोग, सविनय अवज्ञा और "भारत छोड़ो आंदोलन" के माध्यम से उन्होंने भारतीय जनमानस को संघर्ष के सक्रिय किंतु अहिंसक मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

पं. जवाहरलाल नेहरू ने स्वतंत्रता संग्राम में वैचारिक नेतृत्व देते हुए भारत के भविष्य की आधुनिक, वैज्ञानिक, लोकतांत्रिक रूपरेखा प्रस्तुत की। उनके लेखन एवं विदेश नीति–दृष्टि ने संघर्ष को वैश्विक मंच पर मान्यता दिलाई।

सुभाष चंद्र बोस ने स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए सशस्त्र क्रांति और अंतरराष्ट्रीय सहयोग का मार्ग अपनाया। आज़ाद हिंद फ़ौज और "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा" जैसे प्रखर घोष के माध्यम से उन्होंने युवाओं में साहस, संगठन और त्याग का उन्मेष किया।

भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु ने क्रांतिकारी देशभक्ति का अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य की अन्यायपूर्ण नीतियों का प्रतिरोध करते हुए युवाओं में क्रांतिकारी चेतना और वैचारिक स्वतंत्रता का संचार किया।

सरदार वल्लभभाई पटेल ने स्वतंत्रता संग्राम में संगठनात्मक शक्ति और दृढ़ नेतृत्व का परिचय दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत 562 रियासतों का एकीकरण कर उन्होंने "भारत की अखंडता और राष्ट्रीय एकता" सुनिश्चित की, जिसके कारण उन्हें "लौह पुरुष" कहा गया।

बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और बिपिन चंद्र पाल की "लाल-बाल-पाल" त्रयी ने राष्ट्रवाद को उग्र, सशक्त और जनोन्मुखी रूप प्रदान किया। तिलक ने "स्वराज्य" को जनता का जन्मसिद्ध अधिकार घोषित किया; लाजपत राय ने विदेशी शासन के विरुद्ध निरंतर संघर्ष किया; और पाल ने क्रांतिकारी विचारधारा का बौद्धिक विस्तार किया।

चंद्रशेखर आज़ाद ने सशस्त्र क्रांति की परंपरा को मजबूत किया और अंग्रेज़ों के सामने आत्मसमर्पण न करने की प्रतिज्ञा निभाते हुए "आज़ाद" नाम को सार्थक किया।

रविंद्रनाथ टैगोर ने साहित्य, शिक्षा और कला के माध्यम से स्वतंत्रता को सांस्कृतिक-बौद्धिक स्वरूप प्रदान किया। "जन-गण-मन" वंदना के रचनाकार के रूप में उन्होंने राष्ट्रीय चेतना को सांस्कृतिक गौरव और आत्मबोध से संपन्न किया।

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर ने स्वतंत्रता को सामाजिक न्याय और समानता के संदर्भ में विस्तृत किया। उन्होंने भारत के संविधान द्वारा स्वतंत्रता को नागरिक अधिकार, समानता और न्याय के आधार पर स्थायी स्वरूप प्रदान किया।

सरोजिनी नायडू ने स्वतंत्रता संग्राम में महिला नेतृत्व, प्रेरणा और वाक्शक्ति का सशक्त परिचय दिया। "भारत कोकिला" कहलाने वाली नायडू ने सत्याग्रह में सक्रिय भूमिका निभाई तथा महिलाओं में राष्ट्रभाव और आत्मनिर्भरता का संचार किया।

इन सभी महान विभूतियों के संघर्षों का समन्वय स्वतंत्रता को केवल राजनीतिक उपलब्धि नहीं, बल्कि समग्र राष्ट्रीय नवजागरण में परिवर्तित करने वाला सिद्ध हुआ।

1.4 क्रांतिकारी व राष्ट्रवादी विचारधाराएँ – वैचारिक पृष्ठभूमि और प्रभाव

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन बहु-स्तरीय वैचारिक धाराओं से सम्पन्न था। यह केवल राजनीतिक प्रतिरोध का स्वर नहीं था, बल्कि राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक पुनर्जागरण, सामाजिक जागृति और आध्यात्मिक स्वतंत्रता के सम्मिलित प्रवाह का परिणाम था। राष्ट्रवादी विचारधारा का दार्शनिक आधार भारतीय सभ्यता के आत्मस्वर—स्वत्व, स्वाभिमान, स्वराज्य और सांस्कृतिक गौरव—में निहित था। उन्नीसवीं शताब्दी में बंगाल नवजागरण, स्वामी विवेकानंद के वैदिक मानवतावाद, दयानंद सरस्वती के वेद-आधारित स्वराज्य-संकल्प और बंकिमचंद्र के "वंदेमातरम्" ने राष्ट्रवाद को मजबूत वैचारिक भूमि प्रदान की।

धीरे-धीरे यह राष्ट्रवाद संगठनात्मक और राजनीतिक रूप में उभरने लगा। आरंभिक राष्ट्रवाद नरमपंथी नेतृत्व के माध्यम से संवैधानिक सुधार, याचिका और संवाद की नीति पर आधारित था। दादाभाई नौरोजी, गोखले

और अन्य नेतृत्व ने यह विश्वास रखा कि न्यायपूर्ण संवाद और प्रार्थनापत्र के माध्यम से स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। किंतु परिस्थितियाँ बदलीं, और बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में उग्र राष्ट्रवादी विचारधारा ने जन्म लिया, जिसने स्वराज्य को याचना नहीं, अधिकार माना। लाल-बाल-पाल त्रयी (लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल) ने राष्ट्रवाद को दृढ़, समाजोन्मुखी और जन-सक्रिय रूप प्रदान किया। तिलक का उद्घोष— "स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है"—राष्ट्रवादी मानस की धड़कन बन गया।

इसी वैचारिक भूमि से क्रांतिकारी धारा ने जन्म लिया, जिसका उद्देश्य था—ब्रिटिश शासन की नींव को प्रत्यक्ष संघर्ष तथा सशस्त्र प्रतिरोध द्वारा चुनौती देना। क्रांतिकारी आंदोलन का दार्शनिक आधार त्याग, बलिदान, स्वाभिमान और मातृभूमि-भक्ति था। अनुष्ठान समितियों, गुप्त संगठनों, और स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु प्रत्यक्ष कार्रवाई क्रांतिकारी पद्धति के मुख्य उपकरण बने। भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, बटुकेश्वर दत्त, सुखदेव, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकुल्ला खान आदि ने युवाओं में निर्भीकता, क्रांतिकारी चेतना और बलिदान की लौ प्रज्वलित की। भगत सिंह ने क्रांति को विचारों के परिवर्तन के रूप में परिभाषित कर उसे बौद्धिक ऊँचाई प्रदान की।

इन दोनों धाराओं के समांतर महात्मा गांधी ने अहिंसक राष्ट्रवाद को मूर्त रूप दिया। सत्याग्रह, असहयोग और सविनय अवज्ञा के माध्यम से उन्होंने स्वतंत्रता संघर्ष को नैतिकता और आत्मबल के आयाम पर प्रतिष्ठित किया। गांधीवाद ने संघर्ष में व्यापक जन-सहभागिता, स्त्री-शक्ति, किसान-श्रमिक वर्ग और वंचित समाज को जोड़कर स्वतंत्रता को जनांदोलन का स्वर दिया।

इन तीनों धाराओं—नरमपंथी, उग्र राष्ट्रवादी और क्रांतिकारी—का संयुक्त प्रभाव यह हुआ कि स्वतंत्रता आंदोलन वैचारिक, नैतिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक और सशस्त्र—सभी स्तरों पर सशक्त हुआ। परिणामस्वरूप स्वतंत्रता

केवल राजनीतिक मुक्ति न रहकर राष्ट्रीय पुनर्जागरण का आधार बन सकी।

भारत की स्वतंत्रता केवल एक ऐतिहासिक उपलब्धि नहीं, बल्कि आदर्श, आत्मबल और संघर्ष की सतत

1.5. युवाओं के लिए स्वतंत्रता का संदेश – "स्वतंत्रता पुकारती" का वर्तमान संदर्भ

प्रेरणा है। "स्वतंत्रता पुकारती" आज भी वही स्वर है जो कभी रणभूमि में गूँजा था—पर अब यह युवाओं के हृदय में कर्तव्य, चरित्र और सृजन के रूप में गूँजता है। आज़ादी केवल तिरंगे के नीचे खड़े होकर जयघोष करना नहीं है, बल्कि अपने कर्म, विचार और आचरण से देश को गौरवान्वित करना है।

युवा राष्ट्र की धड़कन हैं—उनकी ऊर्जा, विचारशीलता और संकल्प ही भारत के भविष्य का निर्माण करती है। आज स्वतंत्रता हमें यह संदेश देती है कि अब हमें देश के पुनर्निर्माण, सामाजिक सद्भाव और नैतिक उत्थान के मार्ग पर अग्रसर होना है। युवा वर्ग को यह समझना होगा कि स्वतंत्रता का अर्थ केवल अधिकार प्राप्त करना नहीं, बल्कि कर्तव्य निभाना, आदर्शों की रक्षा करना, और राष्ट्रीय एकता को सशक्त बनाना भी है।

"स्वतंत्रता पुकारती" का आज का अर्थ है—अज्ञान के स्थान पर शिक्षा, भ्रष्टाचार के स्थान पर ईमानदारी, असहिष्णुता के स्थान पर प्रेम, और आलस्य के स्थान पर कर्मनिष्ठा को अपनाना। राष्ट्र हमसे केवल जयघोष नहीं चाहता, बल्कि कर्म, निष्ठा और योगदान की अपेक्षा करता है। जो युवा अपने भीतर की सीमाओं को तोड़कर समाज के लिए कार्य करता है, वही सच्चे अर्थों में स्वतंत्रता का रक्षक है।

आज की युवा पीढ़ी तकनीकी युग में जी रही है—जहाँ सुविधाएँ हैं, परंतु मूल्य और अनुशासन की परीक्षा भी। इस युग में स्वतंत्रता पुकारती है कि हम अपने ज्ञान, विज्ञान, कौशल और संवेदना को देशहित में समर्पित करें। यह पुकार

आत्मानुशासन, सेवा और सृजन की है। स्वतंत्रता हमें बुला रही है—देश के निर्माता, विचारक और कर्मयोगी बनने के लिए।

प्रेरक कविता – "स्वतंत्रता की पुकार"

स्वतंत्रता पुकारती है, उठो हे नवयुवक वीर,

तुमसे ही उज्ज्वल होगा, भारत का भविष्य अधीर।

त्याग से तपे तुम्हारे मन में, फिर प्रज्वलित हो दीप,

राष्ट्र तुम्हें निहारे आशा से, रखे तुम्हारे कदमों की नीत।

आज़ाद भारत – अधिकार, कर्तव्य और नागरिक जिम्मेदारियाँ

स्वतंत्र भारत केवल राजनीतिक स्वाधीनता का प्रतीक नहीं, बल्कि एक नैतिक और सामाजिक उत्तरदायित्व की प्रक्रिया है। 15 अगस्त 1947 को मिली स्वतंत्रता ने हमें अधिकार तो दिए, परंतु इन अधिकारों के साथ कर्तव्यों का दायित्व भी सौंपा। राष्ट्र की उन्नति तभी संभव है, जब नागरिक अपने अधिकारों का विवेकपूर्ण प्रयोग करें और अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करें।

भारतीय संविधान ने प्रत्येक नागरिक को मौलिक अधिकार प्रदान किए—समानता का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, शिक्षा और संस्कृति की स्वतंत्रता, संवैधानिक उपचार आदि। ये अधिकार नागरिक को सम्मानजनक जीवन जीने की गारंटी देते हैं। परंतु, यह भी सत्य है कि अधिकार और कर्तव्य एक-दूसरे के पूरक हैं। जहाँ अधिकार व्यक्ति को स्वतंत्रता देते हैं, वहीं कर्तव्य उसे अनुशासन और उत्तरदायित्व का बोध कराते हैं।

स्वतंत्रता की रक्षा केवल सीमाओं की सुरक्षा से नहीं होती; यह तब सशक्त होती है, जब नागरिक सत्य, ईमानदारी, श्रम और संवेदना को अपने जीवन का आधार बनाते हैं। आज़ाद भारत में नागरिकों का यह कर्तव्य है कि वे अपने समाज, पर्यावरण, राष्ट्र और मानवता के प्रति जागरूक रहें। प्रत्येक व्यक्ति यदि अपने दायित्वों को निष्ठा से निभाए—भ्रष्टाचार का विरोध करे, स्वच्छता रखे, कर का ईमानदारी से भुगतान करे, और सामाजिक समरसता बनाए रखे—तो राष्ट्र स्वतः ही प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होगा।

आज स्वतंत्रता की वास्तविक परीक्षा इस बात में निहित है कि हम अपने लोकतंत्र, विविधता और एकता को कितनी निष्ठा से निभाते हैं। हमें यह समझना होगा कि स्वतंत्रता केवल शासन परिवर्तन नहीं, बल्कि चरित्र, दृष्टि और संस्कृति की चेतना का नाम है। भारत का भविष्य उस समय उज्ज्वल होगा, जब हर नागरिक कह सके—

"मैं अपने अधिकारों के प्रति सजग हूँ, परंतु अपने कर्तव्यों के प्रति और भी अधिक प्रतिबद्ध हूँ।"

नागरिक जिम्मेदारी केवल कर्तव्य नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय संस्कार है। यह वह भावना है, जो व्यक्ति को "मैं" से "हम" की ओर ले जाती है। आज का भारत शिक्षा, विज्ञान, और डिजिटल प्रगति में अग्रसर है; किंतु इस प्रगति का अर्थ तभी सार्थक होगा, जब इसका लाभ हर वर्ग तक पहुँचे और नागरिक अपनी भूमिका सजगता से निभाएँ।

स्वतंत्रता की रक्षा कोई एक दिन का कार्य नहीं—यह सतत साधना है। हर भारतीय को यह स्मरण रखना होगा कि स्वतंत्रता जितनी कठिनाई से मिली है, उतनी ही सावधानी से इसकी रक्षा करनी होगी।

प्रगति जांचें:

प्रश्न 1: "स्वतंत्रता पुकारती" शीर्षक से आप क्या समझते हैं? इस विषय का आधुनिक भारत के युवाओं से क्या संबंध है?

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 2:स्वतंत्रता केवल राजनीतिक मुक्ति नहीं, बल्कि नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी भी है — इस कथन की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

1.6. सारांश

"स्वतंत्रता पुकारती" स्वतंत्र भारत की आत्मा की आवाज़ है, जो हमें अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों की याद दिलाती है। यह बताती है कि आज़ादी केवल शासन परिवर्तन नहीं, बल्कि विचार, आचरण और नैतिकता की स्वतंत्रता भी है। यह पुकार हमें प्रेरित करती है कि हम अपने देश, समाज और संस्कृति के प्रति सजग रहें। आज के युवा इस संदेश को अपनाकर राष्ट्र की प्रगति में भागीदार बनें। सच्ची स्वतंत्रता वही है, जब हर नागरिक अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यनिष्ठ और ईमानदार जीवन जीने का संकल्प ले।

भारत की स्वतंत्रता असंख्य बलिदानों और संघर्षों से प्राप्त हुई है। यह केवल विदेशी शासन से मुक्ति नहीं, बल्कि स्वाभिमान, आत्मनिर्भरता और नैतिक चेतना का प्रतीक है। आज के युग में स्वतंत्रता का अर्थ सीमाओं की रक्षा तक सीमित नहीं, बल्कि विचारों की स्वतंत्रता, शिक्षा, समानता और सामाजिक सद्भाव की रक्षा करना भी है।

"स्वतंत्रता पुकारती" आज के युवाओं को यह संदेश देती है कि वे अपने कर्म, ज्ञान और चरित्र के माध्यम से देश को ऊँचाइयों पर पहुँचाएँ। यह पुकार हमें आलस्य नहीं, बल्कि कर्तव्य, अनुशासन और एकता की ओर बुलाती है। स्वतंत्रता का वास्तविक सम्मान तब है जब हम अपने समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिए समर्पित होकर कार्य करें।

1.7. अभ्यास

बहु-विकल्पीय

1. "स्वतंत्रता पुकारती" का मुख्य संदेश क्या है?

   A. केवल स्वतंत्रता दिवस का उत्सव मनाना

   B. अपने अधिकारों की रक्षा करना

   C. स्वतंत्रता के साथ कर्तव्यों का पालन करना

D. विदेशी शासन की आलोचना करना

उत्तर: ☑ C. स्वतंत्रता के साथ कर्तव्यों का पालन करना

2. "स्वतंत्रता पुकारती" विषय का आधुनिक भारत में प्रमुख अर्थ क्या है?

A. राजनैतिक आज़ादी का महत्त्व

B. तकनीकी प्रगति की चर्चा

C. युवाओं को देशनिर्माण के लिए प्रेरित करना

D. इतिहास का अध्ययन

उत्तर: ☑ C. युवाओं को देशनिर्माण के लिए प्रेरित करना

3. स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ क्या है?

A. केवल शासन परिवर्तन

B. सामाजिक, वैचारिक और नैतिक मुक्ति

C. आर्थिक सम्पन्नता

D. धार्मिक अनुष्ठान

उत्तर: ☑ B. सामाजिक, वैचारिक और नैतिक मुक्ति

4. "स्वतंत्रता पुकारती" हमें किस दिशा में प्रेरित करती है?

A. आलस्य और विलासिता की ओर

B. देश सेवा और कर्तव्यनिष्ठा की ओर

C. केवल व्यक्तिगत उन्नति की ओर

D. विदेशी संस्कृति अपनाने की ओर

उत्तर: ☑ B. देश सेवा और कर्तव्यनिष्ठा की ओर

5. "स्वतंत्रता पुकारती" का मुख्य सम्बोधन किस वर्ग से है?

A. बालकों से

B. वृद्धों से

C. युवाओं से

D. राजनेताओं से

उत्तर: ☑ C. युवाओं से

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. "स्वतंत्रता पुकारती" शीर्षक का क्या अर्थ है?
2. स्वतंत्रता केवल राजनीतिक मुक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी क्यों है?
3. "स्वतंत्रता पुकारती" में युवाओं की भूमिका को कैसे रेखांकित किया गया है?
4. आधुनिक भारत में "स्वतंत्रता पुकारती" का क्या संदेश है?
5. सच्ची स्वतंत्रता का सम्मान करने का सबसे उचित तरीका क्या है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. "स्वतंत्रता पुकारती" शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
2. स्वतंत्रता के साथ कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का क्या संबंध है? "स्वतंत्रता पुकारती" के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।
3. "स्वतंत्रता पुकारती" में युवाओं की भूमिका को विस्तृत रूप से वर्णन कीजिए।
4. आधुनिक भारत के संदर्भ में "स्वतंत्रता पुकारती" विषय की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।
5. "स्वतंत्रता पुकारती" को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की विचारधारा और आधुनिक राष्ट्रनिर्माण से जोड़कर विवेचन कीजिए।

1.8. सन्दर्भ एवं अनुशंषित पठन सामग्री

टैगोर, रवीन्द्रनाथ। राष्ट्रीयता (Nationalism)। कोलकाता: विश्वभारती प्रकाशन, 1917।

→ स्वतंत्रता और राष्ट्रवाद के सांस्कृतिक व मानवीय दृष्टिकोण का विवेचन करती है।

चंद्र, बिपिन। India's Struggle for Independence। नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स, 1989।

→ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के क्रमबद्ध ऐतिहासिक तथ्यों और विचारधाराओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

लोहिया, राममनोहर। स्वतंत्रता सेनानियों के संस्मरण। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1962।

→ स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले सेनानियों के अनुभव और संघर्षों का सजीव चित्रण।

हिंदी भाषा

इकाई-2: संज्ञा, सर्वनाम

संरचना

2.1. परिचय

2.2. उद्देश्य

2.3. संज्ञा की परिभाषा एवं संज्ञा के भेद

2.4. सर्वनाम परिभाषा एवं सर्वनाम के भेद

2.5. संज्ञा और सर्वनाम के बीच अंतर

2.6. सारांश

2.7. अभ्यास

2.8. सन्दर्भ एवं अनुशंषित पठन सामग्री

2.1. परिचय

भाषा में संज्ञा का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। संज्ञा वह शब्द है जो किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु, भावना या गुण का बोध कराए। जैसे— *राम, नदी, पुस्तक, ईमानदारी* आदि।

संस्कृत मूल से बना यह शब्द "संज्ञा" का अर्थ ही है — "नाम देना"। संज्ञा शब्द वाक्य का मूलाधार है क्योंकि बिना नामकरण के किसी भी वस्तु या व्यक्ति की पहचान संभव नहीं।

सर्वनाम शब्द "सर्व + नाम" से बना है, जिसका अर्थ है "सबके स्थान पर प्रयोग होने वाला शब्द"।

वाक्य में बार–बार संज्ञा के प्रयोग से बचने के लिए सर्वनाम का उपयोग किया जाता है।

2.2. उद्देश्य

संज्ञा और सर्वनाम की मूल अवधारणा को समझना — विद्यार्थी यह जान सकें कि संज्ञा किसे कहते हैं और सर्वनाम किस प्रकार संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं।

सज्ञा एवं सर्वनाम के भेदों को पहचानना — विद्यार्थी विभिन्न प्रकार की संज्ञाओं (व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक आदि) और सर्वनामों (पुरुषवाचक, निजवाचक, प्रश्नवाचक आदि) को पहचान और उदाहरण सहित वर्गीकृत कर सकें।

संज्ञा और सर्वनाम का वाक्यों में प्रयोग करना सीखना — विद्यार्थी व्यावहारिक भाषा में इन शब्दों का सही प्रयोग कर सकें, जिससे वाक्य संरचना स्पष्ट और सुगम बने।

भाषा की शुद्धता और अभिव्यक्ति कौशल का विकास करना — संज्ञा और सर्वनाम के सही उपयोग से विद्यार्थी अपनी लेखन, वाचन और संवाद की भाषा को अधिक सटीक, प्रभावशाली और सौंदर्यपूर्ण बना सकें।

2.3. संज्ञा की परिभाषा

वह शब्द जो किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी, गुण या भावना का नाम बताता है, उसे **संज्ञा** कहते हैं।

उदाहरण:

व्यक्ति – *मोहन, राधा, शिक्षक*

स्थान – *दिल्ली, भारत, गंगा*

वस्तु – *किताब, कुर्सी, फूल*

गुण – *सौंदर्य, बुद्धि, दया*

भावना – *खुशी, दुख, प्रेम*

संज्ञा के भेद

व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper Noun) – किसी विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु का नाम।

जैसे – रमा, आगरा, हिमालय।

जातिवाचक संज्ञा (Common Noun) – समान जाति के सभी व्यक्तियों या वस्तुओं का नाम।
जैसे – लड़की, शहर, पर्वत।

भाववाचक संज्ञा (Abstract Noun) – किसी गुण, अवस्था या भावना का बोध कराने वाला शब्द।
जैसे – मिठास, क्रोध, ईमानदारी।

द्रव्यवाचक संज्ञा (Material Noun) – किसी द्रव्य या पदार्थ का नाम।
जैसे – जल, दूध, सोना।

समूहवाचक संज्ञा (Collective Noun) – किसी समूह या समुदाय का नाम।
जैसे – झुंड, सेना, वर्ग।

संज्ञा के प्रयोग, लिंग और वचन

(1) संज्ञा के लिंग

संज्ञा दो प्रकार के लिंगों में पाई जाती है –

पुल्लिंग : पुरुष वर्ग का बोध कराए। जैसे – *लड़का, राजा, बैल।*

स्त्रीलिंग : स्त्री वर्ग का बोध कराए। जैसे – *लड़की, रानी, गाय।*
कुछ संज्ञाएँ **नपुंसकलिंग** भी होती हैं, जैसे – *फल, पानी, दूध।*

(2) संज्ञा के वचन

एकवचन : जब किसी एक व्यक्ति या वस्तु का बोध हो।
जैसे – बच्चा, घर, फूल।

बहुवचन : जब एक से अधिक का बोध हो।
जैसे – बच्चे, घरों, फूलों।

(3) संज्ञा के प्रयोग

संज्ञा वाक्य में कर्ता, कर्म, संप्रदान, अपादान आदि रूपों में प्रयुक्त होती है। जैसे –

राम ने फल खाया। — यहाँ "राम" कर्ता है और "फल" कर्म है।

संज्ञा का सही प्रयोग भाषा की स्पष्टता और सौंदर्य दोनों को बढ़ाता है।

1.4. सर्वनाम परिभाषा:

जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होकर उसका बोध कराए, उसे **सर्वनाम** कहते हैं।

उदाहरण:

राम स्कूल गया। राम ने पढ़ाई की। राम अच्छा विद्यार्थी है।
→ *राम* की पुनरावृत्ति से बचने के लिए हम कहेंगे –

राम स्कूल गया। वह अच्छा विद्यार्थी है।

यहाँ "वह" सर्वनाम है।

सर्वनाम के भेद

पुरुषवाचक सर्वनाम – व्यक्ति या पुरुष के अनुसार भेदित।

प्रथम पुरुष – *मैं, हम*

मध्यम पुरुष – *तू, तुम*

उत्तम पुरुष – *वह, वे*

निजवाचक सर्वनाम – स्वयं का बोध कराते हैं। *जैसे – अपना, स्वयं।*

निश्चयवाचक सर्वनाम – निश्चित व्यक्ति या वस्तु को दर्शाते हैं। *जैसे – यह, वह।*

अनिश्चयवाचक सर्वनाम – अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध। *जैसे – कोई, कुछ, किसी।*

प्रश्नवाचक सर्वनाम – प्रश्न पूछने के लिए। *जैसे – कौन, क्या, किसने।*

सम्बन्धवाचक सर्वनाम – वाक्य में सम्बन्ध व्यक्त करते हैं। *जैसे – जो, जैसा, जितना।*

सर्वनाम का महत्व

सर्वनाम भाषा को संक्षिप्त, प्रभावशाली और दोहराव से मुक्त बनाता है। यह संज्ञा की पुनरावृत्ति रोककर वाक्य को सुगम और सजीव बनाता है।

2.5. संज्ञा और सर्वनाम के बीच अंतर

क्रम	आधार	संज्ञा (Noun)	सर्वनाम (Pronoun)

1	अर्थ	संज्ञा वह शब्द है जो किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, गुण या भावना का नाम बताता है।	सर्वनाम वह शब्द है जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किया जाता है।
2	शब्द का उपयोग	वाक्य में किसी वस्तु या व्यक्ति को नाम देने के लिए प्रयोग होता है।	वाक्य में बार-बार संज्ञा की पुनरावृत्ति से बचने के लिए प्रयोग होता है।
3	उदाहरण	राम, गंगा, पुस्तक, दिल्ली, प्रेम	वह, यह, तुम, मैं, कोई, जो
4	प्रकार (भेद)	व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, द्रव्यवाचक, भाववाचक, समूहवाचक	पुरुषवाचक, निजवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, सम्बन्धवाचक
5	वाक्य में प्रयोग	राम विद्यालय गया। (यहाँ राम संज्ञा है)	वह विद्यालय गया। (यहाँ वह सर्वनाम है जो राम के स्थान पर आया है)
6	संख्या	संज्ञा एकवचन और बहुवचन दोनों रूपों में आती है।	सर्वनाम भी संख्या और पुरुष के अनुसार बदलता है।
7	परिवर्तनशीलता	संज्ञा अपने रूप में स्थिर रहती है।	सर्वनाम अपने पूर्ववर्ती संज्ञा के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार बदलता है।
8	महत्व	भाषा में नामकरण और पहचान के लिए आवश्यक।	भाषा में संक्षिप्तता, सौंदर्य और प्रवाह लाने के लिए आवश्यक।

प्रगति जांचें:

प्रश्न 1: संज्ञा और सर्वनाम में क्या अंतर है? प्रत्येक का एक-एक उदाहरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 2: स्वतंत्रता केवल राजनीतिक मुक्ति नहीं, बल्कि नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी भी है — इस कथन की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2.6. सारांश

संज्ञा और सर्वनाम दोनों ही भाषा के महत्वपूर्ण अंग हैं। **संज्ञा** वह शब्द है जो किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, गुण या भावना का नाम बताता है। यह भाषा में पहचान, नामकरण और अर्थ की स्पष्टता प्रदान करता है। संज्ञा के पाँच प्रमुख भेद होते हैं — व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, द्रव्यवाचक, भाववाचक और समूहवाचक। इनसे हमें विभिन्न वस्तुओं, व्यक्तियों और विचारों का ज्ञान होता है।

सर्वनाम, संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होकर भाषा को संक्षिप्त और प्रभावशाली बनाता है। यह पुनरावृत्ति को रोकता है और वाक्य को सहज बनाता है। सर्वनाम के प्रमुख प्रकार हैं — पुरुषवाचक, निजवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक और सम्बन्धवाचक। सर्वनाम का प्रयोग वाक्य को प्रवाहपूर्ण और संतुलित करता है।

संज्ञा और सर्वनाम का सही प्रयोग भाषा की शुद्धता, अभिव्यक्ति और अर्थ की स्पष्टता सुनिश्चित करता है। इन दोनों के ज्ञान से विद्यार्थी न केवल व्याकरणिक दृष्टि से सक्षम बनता है, बल्कि उसके लेखन और बोलचाल में भी सौंदर्य, सरलता और सटीकता आती है।

2.7. अभ्यास

बहु-विकल्पीय

हिंदी भाषा

1. संज्ञा किसे कहते हैं?

A. जो संज्ञा के स्थान पर आए

B. जो किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान का नाम बताए

C. जो क्रिया को दर्शाए

D. जो संबंध दिखाए

उत्तर: ☑ B. जो किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान का नाम बताए

2. “वह” किस प्रकार का शब्द है?

A. संज्ञा

B. सर्वनाम

C. विशेषण

D. क्रिया

उत्तर: ☑ B. सर्वनाम

3. “राम स्कूल गया। वह पढ़ाकू है।” — वाक्य में “वह” कौन-सा शब्द है?

A. संज्ञा

B. सर्वनाम

C. क्रिया

D. विशेषण

उत्तर: ☑ B. सर्वनाम

4. “जल अमृत है।” — यहाँ “जल” कौन-सी संज्ञा है?

A. भाववाचक संज्ञा

B. द्रव्यवाचक संज्ञा

C. समूहवाचक संज्ञा

D. व्यक्तिवाचक संज्ञा

उत्तर: ☑ B. द्रव्यवाचक संज्ञा

5. “कौन”, “क्या”, “किसने” – ये किस प्रकार के सर्वनाम हैं?

A. निश्चयवाचक

B. प्रश्नवाचक

C. सम्बन्धवाचक

D. निजवाचक

उत्तर: ☑ B. प्रश्नवाचक

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. संज्ञा और सर्वनाम में क्या अंतर है?

2. व्यक्तिवाचक संज्ञा और जातिवाचक संज्ञा में अंतर स्पष्ट कीजिए।

3. सर्वनाम का वाक्य में क्या महत्त्व है?

4. द्रव्यवाचक संज्ञा और भाववाचक संज्ञा के उदाहरण दीजिए।

5. सर्वनाम के तीन प्रमुख प्रकार कौन-कौन से हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. संज्ञा की परिभाषा दीजिए और इसके भेदों का वर्णन उदाहरण सहित कीजिए।

2. सर्वनाम की परिभाषा दीजिए और इसके प्रकारों का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

3. संज्ञा और सर्वनाम के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए तथा दोनों के प्रयोग का वाक्य उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

4. वाक्य में संज्ञा और सर्वनाम की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

5. भाषा की शुद्धता और अभिव्यक्ति में संज्ञा और सर्वनाम का क्या योगदान है? विवेचना कीजिए।

2.8. सन्दर्भ एवं अनुशंषित पठन सामग्री

- **नंददुलारे वाजपेयी** – *हिंदी व्याकरण और रचना*। नई दिल्ली: राजपाल एंड सन्स, 2010।
  → इस ग्रंथ में हिंदी भाषा के व्याकरणिक तत्त्वों, विशेष रूप से संज्ञा, सर्वनाम और शब्द–रचना का विस्तृत विवेचन किया गया है।

- **डॉ. रामनाथ शर्मा** – *हिंदी व्याकरण – कारक, वचन और पदपरिचय*। वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा, 2012।
  → इसमें संज्ञा और सर्वनाम के प्रकार, रूप, प्रयोग तथा वाक्य में उनके कार्य का विश्लेषण मिलता है।

· **डॉ. हरदेव बाहरी** – *आधुनिक हिंदी व्याकरण और भाषा-विज्ञान*। दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन, 2008।
→ यह पुस्तक व्याकरण के आधुनिक दृष्टिकोण से संज्ञा, सर्वनाम और अन्य शब्द-भेदों का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करती है।

इकाई-3: पल्लवन

संरचना

3.1. परिचय

3.2. उद्देश्य

3.3. हिंदी भाषा में पल्लवन की प्रक्रिया

3.4. सारांश

3.7. अभ्यास

3.6. सन्दर्भ एवं अनुशंषित पठन सामग्री

1.1. परिचय

'पल्लवन' शब्द संस्कृत के 'पल्लव' धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है — *कोमल अंकुर या नई वृद्धि*।

हिंदी भाषा में 'पल्लवन' का प्रयोग केवल वनस्पति या पौधों की वृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका प्रयोग **भाषा, साहित्य, विचार और संस्कृति की प्रगति व विस्तार** के अर्थ में भी किया जाता है।

भाषा के सन्दर्भ में 'पल्लवन' का अर्थ है — किसी भाषा या साहित्य का **निरंतर विकास, नवीनीकरण और विस्तार**। जैसे पौधे में नई पत्तियाँ, शाखाएँ और फूल विकसित होते हैं, वैसे ही भाषा में नये शब्द, प्रयोग और शैलियाँ विकसित होती हैं।

3.2. उद्देश्य

विद्यार्थी *पल्लवन* शब्द का अर्थ, परिभाषा और उसके जैविक एवं भाषिक सन्दर्भों में प्रयोग को समझ सकें।

विद्यार्थी *पल्लवन की प्रक्रिया* और उससे जुड़े कारकों — जैसे वृद्धि, विकास, पोषण, प्रकाश, तापमान आदि — को क्रमबद्ध रूप में समझा सकें।

विद्यार्थी *पल्लवन* के महत्व और उसके *पर्यावरणीय तथा सामाजिक प्रभावों* को पहचानकर अपने ज्ञान को व्यावहारिक जीवन और पर्यावरण संरक्षण से जोड़ सकें।

3.3. हिंदी भाषा में पल्लवन की प्रक्रिया:

हिंदी का पल्लवन संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और लोकभाषाओं के निरंतर प्रभाव से हुआ है। हिंदी ने समय-समय पर अपनी संरचना, शब्दावली और शैली में परिवर्तन करते हुए नित नई अभिव्यक्ति क्षमता प्राप्त की। यही प्रक्रिया "भाषिक पल्लवन" कहलाती है।

हिंदी भाषा में पल्लवन की ऐतिहासिक प्रक्रिया

(1) संस्कृत से प्राकृत तक:

भारत की प्राचीन भाषा संस्कृत थी। समय के साथ सामान्य जनभाषा के रूप में प्राकृतों का उद्भव हुआ। संस्कृत की जटिलता घटाकर जनसुलभ रूप में जो परिवर्तन हुए, वही प्रारंभिक पल्लवन की प्रक्रिया थी।

(2) अपभ्रंश से हिंदी तक:

प्राकृत के बाद 'अपभ्रंश' भाषाओं का विकास हुआ, जिनसे आधुनिक भारतीय भाषाएँ उत्पन्न हुईं।

अपभ्रंश काल में भाषा का उच्चारण, व्याकरण और शब्द संरचना सरल होती चली गई। इसी से *पुरानी हिंदी* का पल्लवन हुआ।

(3) मध्यकालीन पल्लवन:

भक्ति आंदोलन ने हिंदी को नया जीवन दिया। तुलसीदास, कबीर, सूरदास जैसे कवियों ने लोकभाषा को काव्य के माध्यम से प्रतिष्ठा दी। इस काल में हिंदी केवल संवाद की भाषा नहीं रही, बल्कि **भावना, भक्ति और संस्कृति की भाषा** बन गई।

(4) आधुनिक काल का पल्लवन:

आधुनिक युग में हिंदी का पल्लवन नए शब्दों, विचारों और लेखन शैलियों के साथ हुआ। भारतेंदु हरिश्चंद्र से लेकर महादेवी वर्मा, प्रेमचंद, निराला, पंत और

बाद के लेखकों ने हिंदी को सामाजिक, वैज्ञानिक और तकनीकी दृष्टि से समृद्ध बनाया।

3.4. भाषिक पल्लवन के कारक और महत्व

हिंदी भाषा के पल्लवन के प्रमुख कारक:

सांस्कृतिक आदान-प्रदान:

भारत की विविध भाषाओं और बोलियों के मेल से हिंदी की शब्द-संपदा समृद्ध हुई।

लोकभाषा और साहित्य का प्रभाव:

लोककथाओं, भजनों और लोकगीतों ने हिंदी को जनता की भाषा बनाया।

शिक्षा और तकनीकी विकास:

शिक्षा प्रसार, मुद्रण कला, और मीडिया ने हिंदी के प्रयोग को व्यापक बनाया।

समाज और राजनीति में भूमिका:

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंदी राष्ट्रीय एकता की भाषा बनी।

हिंदी भाषा में पल्लवन का महत्व

पल्लवन भाषा को **जीवंत, लचीला और अनुकूलनशील** बनाए रखता है।

यह हिंदी को समय और समाज के साथ **विकसित और आधुनिक** बनाता है।

हिंदी का पल्लवन इसे **वैज्ञानिक, प्रशासनिक, और वैश्विक भाषा** के रूप में सशक्त कर रहा है।

यह न केवल साहित्य की, बल्कि **राष्ट्रीय चेतना की भाषा** के रूप में उभर रही है।

निष्कर्ष:

हिंदी भाषा का पल्लवन उसकी अनवरत यात्रा का प्रतीक है। यह विकास केवल शब्दों का नहीं, बल्कि **संस्कृति, विचार और भावना की निरंतर वृद्धि** का द्योतक है। जैसे पौधा अपने पल्लवों से नया जीवन पाता है, वैसे ही हिंदी अपने पल्लवन से नित्य नवीन रूप में खिलती रहती है।

हिंदी भाषा

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

भाषा को सुंदर, प्रभावशाली और संक्षिप्त बनाने के लिए अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग किया जाता है। ऐसे शब्दों को **"अनेक शब्दों के लिए एक शब्द"** कहा जाता है।यह भाषा की **संक्षिप्तता, सार्थकता और सौंदर्य** को बढ़ाता है।

उदाहरण:

जो दूसरों के हित में कार्य करे — परोपकारी

जो सब जगह रहता है — सर्वव्यापी

जो कभी न मरता हो — अमर

क्रम	अनेक शब्दों के लिए वाक्यांश	एक शब्द
1	जो सत्य बोले	सत्यवादी
2	जो सब जानता हो	सर्वज्ञ
3	जो मृत्यु से रहित हो	अमर
4	जो दूसरों का उपकार करे	परोपकारी
5	जो दूसरों का दुःख दूर करे	करुणामय
6	जो सब जगह विद्यमान हो	सर्वव्यापी
7	जो सबको समान दृष्टि से देखे	समदर्शी
8	जो एक स्थान पर न ठहरे	चंचल
9	जो नियमों का पालन करे	अनुशासित
10	जो दूसरों की सहायता करे	सहायक
11	जो धर्म का पालन करता हो	धर्मनिष्ठ
12	जो एक पत्नी वाला हो	एकपत्नीव्रती
13	जो सबका प्रिय हो	सर्वप्रिय

क्रम	अनेक शब्दों के लिए वाक्यांश	एक शब्द
14	जो दूसरों की बातें ध्यान से सुने	श्रवणशील
15	जो अन्न खाता हो	भक्षक

प्रगति जांचें:

प्रश्न 1: हिंदी भाषा में **संस्कृति, विचार और भावना की निरंतर वृद्धि के लिए पल्लवन का क्या महत्व है।**

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 2: अभ्यास

जो भगवान में विश्वास रखता हो — _____

जो हर काम में सफलता पाता हो — _____

जो मेहनत से डरता हो — _____

जो शिक्षा देता है — _____

जो किसी से भय नहीं खाता — _____

1.4. सारांश

पल्लवन' शब्द हिंदी भाषा के विकास और विस्तार का प्रतीक है। भाषा का पल्लवन केवल शब्दों के जोड़ने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि उसकी अभिव्यक्ति, शैली और व्याकरणिक संरचना में समयानुसार परिवर्तन का द्योतक है। हिंदी भाषा का पल्लवन संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं से होकर आधुनिक हिंदी तक पहुँचा।यह यात्रा केवल भाषिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तन की भी कहानी है।

मध्यकाल में भक्ति आंदोलन ने हिंदी को जनभाषा बनाया और आधुनिक युग में भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रेमचंद, निराला जैसे साहित्यकारों ने इसके विकास को

नई दिशा दी। आज हिंदी का पल्लवन तकनीकी, वैज्ञानिक और वैश्विक स्तर पर जारी है।
यह भारत की एकता, संस्कृति और आधुनिकता का सेतु बन चुकी है।
इस प्रकार, पल्लवन की अवधारणा यह सिखाती है कि — **भाषा तब जीवित रहती है जब वह समय के साथ स्वयं को नया रूप देती रहती है।**

3.7. अभ्यास

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'पल्लवन' शब्द का शाब्दिक और भाषिक अर्थ स्पष्ट कीजिए।

2. हिंदी भाषा में पल्लवन की ऐतिहासिक प्रक्रिया किन चरणों में हुई?

3. भक्ति आंदोलन ने हिंदी भाषा के पल्लवन में क्या भूमिका निभाई?

4. आधुनिक युग में हिंदी भाषा के पल्लवन के प्रमुख कारण लिखिए।

5. हिंदी भाषा में पल्लवन का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. हिंदी भाषा के पल्लवन की ऐतिहासिक यात्रा संस्कृत से आधुनिक हिंदी तक उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

2. "पल्लवन भाषा के जीवन का प्रतीक है।" — इस कथन के आलोक में हिंदी भाषा के विकास का विश्लेषण कीजिए।

1.6. सन्दर्भ एवं अनुशंषित पठन सामग्री

- **नंददुलारे वाजपेयी** – *हिंदी भाषा और साहित्य का विकास*। वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा, 2011।
  → इस ग्रंथ में हिंदी भाषा की उत्पत्ति, विकास क्रम और भाषिक पल्लवन की ऐतिहासिक प्रक्रिया का विवेचन किया गया है।
- **डॉ. रामविलास शर्मा** – *हिंदी भाषा का इति-वृत्त*। दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2008।

खंड-2

हिंदी भाषा

इकाई – 4: बड़े घर की बेटी

संरचना

4.1 परिचय

4.2 उद्देश्य

4.3 कहानी का सार एवं पृष्ठभूमि : पारिवारिक जीवन और सामाजिक यथार्थ

4.4 प्रमुख पात्रों का विश्लेषण : अन्नपूर्णा, रामेश्वर एवं माधव

4.5 नारी की भूमिका और प्रेमचंद की यथार्थवादी दृष्टि

4.6 भाषा, शैली और कहानी का संदेश

4.7 सारांश

4.8 अभ्यास

4.9 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

4.1 परिचय

मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के वह अमर कथाकार हैं जिन्होंने भारतीय समाज की आत्मा को अपनी कहानियों में जीवित कर दिया।

उनकी कहानियाँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि समाज, नैतिकता और मानवीय संवेदनाओं का जीवंत दस्तावेज़ हैं।

इन्हीं में से एक अत्यंत प्रसिद्ध और शिक्षाप्रद कहानी है — **"बड़े घर की बेटी"**।

यह कहानी भारतीय पारिवारिक जीवन, स्त्री के त्याग और गृहस्थी की मर्यादा का उत्कृष्ट उदाहरण है।

अन्नपूर्णा का चरित्र इस कथा का केंद्र है, जो अपनी समझदारी और संयम से टूटते हुए परिवार को फिर से एक सूत्र में बाँध देती है।

कहानी का मूल संदेश है — **"सच्चा बड़ा घर वह है जहाँ संस्कार, प्रेम और सहनशीलता हो, न कि केवल धन और प्रतिष्ठा।"**

4.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन विद्यार्थियों को निम्नलिखित बातों को समझने में सहायता प्रदान करेगा —

कहानी के विषय-वस्तु और पात्रों की गहराई से समझ।

भारतीय नारी की सामाजिक और पारिवारिक भूमिका का अध्ययन।

प्रेमचंद की यथार्थवादी दृष्टि और सामाजिक सोच को पहचानना।

भाषा, शैली और नैतिक संदेशों के माध्यम से साहित्यिक संवेदनशीलता विकसित करना।

परिवार और समाज में सहनशीलता, प्रेम एवं एकता के महत्व को आत्मसात करना।

4.3 कहानी का सार एवं पृष्ठभूमि : पारिवारिक जीवन और सामाजिक यथार्थ

"बड़े घर की बेटी" का कथानक भारतीय मध्यमवर्गीय परिवार की पृष्ठभूमि पर आधारित है।

कहानी का केंद्र है — **अन्नपूर्णा**, जो बड़े घर की सुसंस्कृत और सुसंयमी कन्या है।

विवाह के बाद वह अपने पति **रामेश्वर** और देवर **माधव** के साथ एक संयुक्त परिवार में रहती है।

एक दिन किसी छोटी सी बात पर दोनों भाइयों के बीच विवाद हो जाता है।

माधव गुस्से में घर छोड़ देता है।

अन्नपूर्णा यह परिस्थिति देखकर भी शांत रहती है।

वह किसी से शिकायत नहीं करती और परिस्थिति को अपने संयम से संभालती है।

समय बीतता है और माधव को अपनी गलती का एहसास होता है।

वह घर लौटता है तो अन्नपूर्णा बिना किसी कटुता के उसे स्नेहपूर्वक स्वीकार करती है।

यह दृश्य कहानी का चरम बिंदु है —

जहाँ प्रेम, क्षमा और विवेक की शक्ति पारिवारिक विघटन पर विजय प्राप्त करती है।

यही प्रेमचंद का **सामाजिक यथार्थवाद** है — कि जीवन का सौंदर्य वैमनस्य में नहीं, बल्कि सद्भाव और क्षमा में निहित है।

.4 प्रमुख पात्रों का विश्लेषण : अन्नपूर्णा, रामेश्वर एवं माधव

अन्नपूर्णा

अन्नपूर्णा इस कहानी की आत्मा है।

वह भारतीय नारी के आदर्श गुणों का प्रतीक है — **सहनशीलता, करुणा, विवेक और त्याग।**

बड़े घर में जन्म लेने के बावजूद उसमें घमंड नहीं है।

वह परिवार की एकता और मर्यादा को सबसे ऊपर रखती है।

अन्नपूर्णा का धैर्य और विनम्रता ही घर में पुनः शांति का कारण बनती है।

रामेश्वर

रामेश्वर एक शिक्षित, सज्जन और मर्यादित व्यक्ति है, परंतु कभी-कभी अहंकार और क्रोध से ग्रस्त हो जाता है।

वह अपनी पत्नी की समझदारी से प्रभावित होता है और अंततः उसे समझ आता है कि *गृहस्थ जीवन का आधार केवल प्रेम और धैर्य है।*

माधव

माधव का स्वभाव चंचल और अधीर है।

वह छोटी बातों पर क्रोधित होकर घर छोड़ देता है, परंतु अन्नपूर्णा के प्रेम और क्षमाशीलता से प्रभावित होकर लौट आता है।

उसका परिवर्तन कहानी का सबसे भावनात्मक और शिक्षाप्रद क्षण है।

4.5 नारी की भूमिका और प्रेमचंद की यथार्थवादी दृष्टि

प्रेमचंद ने इस कहानी में भारतीय नारी के उस रूप को प्रस्तुत किया है जो परिवार की आत्मा है।

अन्नपूर्णा केवल गृहिणी नहीं, बल्कि **संस्कारों की रक्षक और शांति की**

दूत है।

वह परिवार को जोड़ने का कार्य करती है, न कि तोड़ने का।

प्रेमचंद की नारी पात्र हमेशा दृढ़ होती हैं — वे पुरुषों की अधीन नहीं, बल्कि उनके नैतिक पथप्रदर्शक हैं।

यह यथार्थवाद प्रेमचंद की विशेषता है — उन्होंने समाज को वैसा ही दिखाया जैसा वह वास्तव में है।

उनकी रचनाएँ न तो आदर्शवाद की अंधी पूजा करती हैं और न ही यथार्थ को विकृत करती हैं।

उन्होंने कहा था, "साहित्य जीवन का दर्पण है।"

"बड़े घर की बेटी" में उन्होंने इसी विचार को व्यवहारिक रूप दिया है।

4.6 भाषा, शैली और कहानी का संदेश

कहानी की भाषा सरल, सजीव और प्रभावशाली है।

प्रेमचंद ने बोलचाल की भाषा का उपयोग किया है जिससे पात्रों के संवाद स्वाभाविक और भावनात्मक लगते हैं।

उनकी शैली **संवादात्मक, कथात्मक और नैतिक भाव से युक्त** है।

कहानी का संदेश अत्यंत गहरा है —

परिवार की एकता धन से नहीं, संस्कारों से बनती है।

स्त्री की क्षमाशीलता घर की सबसे बड़ी शक्ति है।

क्रोध और अहंकार विनाश का कारण हैं, जबकि प्रेम और धैर्य स्थायी सुख देते हैं।

प्रगति जांचें:

प्रश्न 1: कहानी *"बड़े घर की बेटी"* में अन्नपूर्णा के चरित्र के माध्यम से मुंशी प्रेमचंद ने किस प्रकार भारतीय नारी के आदर्श रूप को प्रस्तुत किया है?

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 2: "बड़ा घर वह नहीं जहाँ धन अधिक हो, बल्कि जहाँ संस्कार और प्रेम हो।"

.....

.....

.....

.....

निष्कर्ष:

"बड़े घर की बेटी" केवल एक कहानी नहीं, बल्कि एक सामाजिक दर्शन है।

यह उस नारी की विजय कथा है जो प्रेम, धैर्य और क्षमा के बल पर परिवार की मर्यादा बनाए रखती है। प्रेमचंद ने इस रचना में भारतीय संस्कृति की जड़ों को शब्दों में पिरो दिया है —और यही इसे कालजयी बनाता है।

4.7 सारांश

"बड़े घर की बेटी" एक ऐसी कहानी है जो आज भी हर परिवार में प्रासंगिक है।

अन्नपूर्णा का चरित्र हमें सिखाता है कि **सहनशीलता कमजोरी नहीं, बल्कि एक महान शक्ति है।**

कहानी में प्रेमचंद ने भारतीय समाज की उस सच्चाई को उजागर किया है जहाँ स्त्री ही घर की धुरी है।

कहानी का हर प्रसंग हमें यह सिखाता है कि "बड़ा घर" वह नहीं होता जो आर्थिक रूप से सम्पन्न हो,

बल्कि वह जहाँ **सद्भाव, मर्यादा और प्रेम का वास हो।**

4.8 अभ्यास (Exercises)

लघु उत्तरीय प्रश्न

"बड़े घर की बेटी" कहानी का प्रमुख संदेश क्या है?

अन्नपूर्णा के चरित्र की दो मुख्य विशेषताएँ लिखिए।

माधव का व्यवहार कहानी में क्या मोड़ लाता है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

"बड़े घर की बेटी" को भारतीय नारी की आदर्श कथा क्यों कहा गया है?

प्रेमचंद के यथार्थवाद की विशेषताएँ इस कहानी में किस प्रकार प्रकट होती हैं?

4.9 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

मुंशी प्रेमचंद — *मानसरोवर भाग–1*, राजपाल एंड सन्स, नई दिल्ली।

डॉ. रामविलास शर्मा — *प्रेमचंद और उनका युग*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

नामवर सिंह — *कहानी नई कहानी*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

नंददुलारे वाजपेयी — *हिंदी साहित्य का इतिहास*, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

डॉ. विद्यानिवास मिश्र — *प्रेमचंद की कहानियों में समाज और संस्कृति*, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।

इकाई – 5: मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

संरचना

5.1 परिचय
5.2 उद्देश्य
5.3 मुहावरों का अर्थ, प्रकार एवं प्रयोग
5.4 लोकोक्तियों का अर्थ, प्रकार एवं सामाजिक सन्दर्भ
5.5 मुहावरों और लोकोक्तियों में भेद एवं समानताएँ
5.6 भाषा और साहित्य में मुहावरों एवं लोकोक्तियों का महत्व
5.7 सारांश
5.8 अभ्यास
5.9 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

5.1 परिचय

हिंदी भाषा की अभिव्यक्ति शक्ति उसकी शब्द-संपदा, व्याकरण और भावों की सूक्ष्मता में निहित है।

इसी शक्ति को अधिक सजीव, प्रभावशाली और लोकप्रवाही बनाने में *मुहावरों* और *लोकोक्तियों* की महत्वपूर्ण भूमिका है।

ये दोनों भाषा की आत्मा हैं — जो सामान्य वाक्यों को जीवन्तता, व्यंग्य और गहराई प्रदान करते हैं।

मुहावरा शब्दों का वह समूह होता है जिसका अर्थ शब्दों के सामान्य अर्थ से भिन्न और स्थिर होता है।

जैसे — "नाक कटना", "आँख दिखाना", "कान पकड़ना" आदि।

वहीं **लोकोक्ति** वह कथन है जो लोक अनुभव और जीवन की सच्चाई पर आधारित होती है, जैसे —

"जैसा करोगे वैसा भरोगे", "जाके पैर ना फटी बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई।"

इनका प्रयोग केवल भाषा को अलंकारिक नहीं बनाता, बल्कि **जनजीवन, संस्कृति और अनुभव का दर्पण** भी प्रस्तुत करता है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद विद्यार्थी —

मुहावरों और लोकोक्तियों की परिभाषा, स्वरूप और प्रयोग समझ सकेंगे।

दोनों के **अंतर और समानता** को स्पष्ट कर पाएंगे।

सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक महत्त्व का विश्लेषण कर सकेंगे।

अपनी भाषा और लेखन शैली में **प्राकृतिकता और अभिव्यंजकता** ला सकेंगे।

साहित्यिक सन्दर्भों में इनके प्रयोग की **कलात्मक भूमिका** पहचान सकेंगे।

5.3 मुहावरों का अर्थ, प्रकार एवं प्रयोग

(क) *मुहावरे का अर्थ:*

मुहावरा ऐसे निश्चित शब्द समूह को कहा जाता है जिसका अर्थ उसके शब्दार्थ से नहीं, बल्कि *सम्पूर्ण वाक्यांश से निकलने वाला भावार्थ* होता है।

जैसे — "नाक कटना" का अर्थ नाक काटना नहीं, बल्कि *अपमान होना* है।

(ख) *मुहावरों के प्रकार:*

प्रकार	उदाहरण	अर्थ
1. क्रियात्मक मुहावरे	नाक कटना, सिर चढ़ना, कान पकड़ना	कार्य या क्रिया से जुड़े भाव
2. व्यवहारिक मुहावरे	दिल लगाना, दिमाग घूमना	दैनिक जीवन की क्रियाएँ
3. व्यंग्यात्मक मुहावरे	आँख दिखाना, धूल झोंकना	आलोचना या व्यंग्य प्रकट करना
4. भावात्मक मुहावरे	मुँह लटकाना, मन भरना	भावनाओं का चित्रण

(ग) *मुहावरों का प्रयोग:*

मुहावरे लेखन या वाणी को संक्षिप्त, रोचक और प्रभावशाली बनाते हैं।

उदाहरण:

वह परीक्षा में फेल होकर **नाक कटवा बैठा।**

लालच में आकर उसने **अपना हाथ जला लिया।**

मुहावरों के प्रयोग से भाषा में लोकजीवन की गंध और साहित्यिक सौंदर्य दोनों आ जाते हैं।

5.4 लोकोक्तियों का अर्थ, प्रकार एवं सामाजिक सन्दर्भ

(क) *लोकोक्ति का अर्थ:*

लोकोक्ति का शाब्दिक अर्थ है — "लोक में प्रचलित उक्तियाँ।"

ये लोक-अनुभव, परम्परा और जीवन की सीख से उत्पन्न कथन हैं।

इनका उद्देश्य शिक्षाप्रद और नैतिक होता है।

जैसे — "समय रहते चेत जा, वरना पछताना पड़ेगा।"

(ख) *लोकोक्तियों के प्रकार:*

अनुभव-जनित लोकोक्तियाँ – जीवन की सच्चाइयों से उत्पन्न।

☞ "बूँद-बूँद से सागर भरता है।"

नैतिक या नीति-प्रधान लोकोक्तियाँ – आचार-विचार पर आधारित।

☞ "जैसा करोगे वैसा भरोगे।"

प्रेरणात्मक लोकोक्तियाँ – शिक्षाप्रद उद्देश्य से कही जाती हैं।

☞ "मेहनत का फल मीठा होता है।"

(ग) *सामाजिक सन्दर्भ:*

लोकोक्तियाँ समाज की चेतना, अनुभव और नैतिक दृष्टि को व्यक्त करती हैं।

इनसे किसी समाज की संस्कृति, रहन-सहन और लोकबुद्धि का परिचय मिलता है।

उदाहरण —

"घर का भेदी लंका ढाए" समाज में विश्वासघात की निंदा का प्रतीक है।

5.5 मुहावरों और लोकोक्तियों में भेद एवं समानताएँ

आधार	मुहावरा	लोकोक्ति
अर्थ	भावात्मक और संकेतात्मक	उपदेशात्मक या नीतिपरक
रूप	शब्द समूह या वाक्यांश	पूर्ण वाक्य
उद्देश्य	भाषा को सजीव बनाना	जीवन का अनुभव बताना
उदाहरण	आँख दिखाना (धमकाना)	जैसी करनी वैसी भरनी

समानता:

दोनों भाषा को सशक्त, प्रभावी और जनसुलभ बनाते हैं।

दोनों ही लोकबुद्धि, अनुभव और जीवन के यथार्थ का दर्पण हैं।

5.6 भाषा और साहित्य में मुहावरों एवं लोकोक्तियों का महत्व

अभिव्यक्ति की शक्ति:

मुहावरे और लोकोक्तियाँ भाषा को संक्षिप्त और भावनात्मक बनाती हैं।

लोक संस्कृति का प्रतीक:

ये लोकजीवन, परम्पराओं और रीति-रिवाजों के परिचायक हैं।

साहित्यिक सौंदर्य:

प्रेमचंद, निराला, तुलसीदास, सूरदास जैसे लेखकों ने अपनी रचनाओं में इनका भरपूर उपयोग किया है।

नैतिकता और शिक्षण मूल्य:

लोकोक्तियाँ जीवन के व्यावहारिक और नैतिक पक्षों को उजागर करती हैं।

भाषा की परिपक्वता:

इनके प्रयोग से भाषा में परिपक्वता और लोकसंपृक्ति बढ़ती है।

निष्कर्ष:

"मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ" केवल भाषा के उपकरण नहीं, बल्कि **जीवन दर्शन के प्रतीक** हैं।

इनके माध्यम से हिंदी भाषा न केवल अपने साहित्यिक वैभव को बढ़ाती है,

बल्कि भारतीय समाज की बुद्धिमत्ता, विनोद और नैतिक चेतना को भी प्रकट करती है।

प्रगति जांचें:

प्रश्न 1: मुहावरों एवं लोकोक्तियों का जीवन में क्या महत्व है।

.....

.....

.....**प्रश्न 2:** लोकोक्तियों का अर्थ, प्रकार क्या है।

.....

.....

.....

5.7 सारांश

मुहावरे और लोकोक्तियाँ हिंदी भाषा की आत्मा हैं।

वे केवल शब्द समूह नहीं, बल्कि संस्कृति, अनुभव और लोकज्ञान के प्रतीक हैं।

जहाँ मुहावरे भाषा को सजीव और रोचक बनाते हैं, वहीं लोकोक्तियाँ उसे गहराई और विचार प्रदान करती हैं।

इनके प्रयोग से हिंदी भाषा **अधिक जनसुलभ, सरस और जीवन्त** बन जाती है।

5.8 अभ्यास

✍ लघु उत्तरीय प्रश्न

मुहावरे की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

लोकोक्ति का समाज में क्या महत्व है?

“मुहावरे और लोकोक्तियाँ” में दो प्रमुख अंतर लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

"हिंदी भाषा में मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग साहित्य को जीवंत बनाता है।" — विवेचन कीजिए।

लोक संस्कृति के संवाहक रूप में लोकोक्तियों की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

5.9 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

डॉ. हरदेव बाहरी – *हिंदी मुहावरे और लोकोक्तियाँ*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

डॉ. श्यामसुंदर दास – *हिंदी शब्द सागर (खंड–3)*, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

डॉ. नंदकिशोर तिवारी – *लोकजीवन और हिंदी लोकोक्तियाँ*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

डॉ. किशोरीदास वाजपेयी – *हिंदी व्याकरण और रचना*, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली।

इकाई – 6: तत्सम, तद्भव एवं पर्यायवाची शब्द

संरचना

6.1 परिचय

6.2 उद्देश्य

6.3 तत्सम शब्द: अर्थ, उत्पत्ति एवं उदाहरण

6.4 तद्भव शब्द : अर्थ, रूपांतरण प्रक्रिया एवं उदाहरण

6.5 तत्सम और तद्भव शब्दों का अंतर एवं भाषा में महत्त्व

6.6 पर्यायवाची शब्द : परिभाषा, प्रकार एवं प्रयोग

6.7 भाषा-सौंदर्य में तत्सम, तद्भव और पर्यायवाची की भूमिका

6.8 सारांश

6.9 अभ्यास

6.10 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

6.1 परिचय

हिंदी भाषा की समृद्धि और गहराई का एक प्रमुख कारण इसकी शब्द-संपदा है।

हिंदी शब्दावली विविध स्रोतों से विकसित हुई है — संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, अरबी, फ़ारसी, उर्दू तथा अंग्रेज़ी से आए शब्दों का इसमें समावेश है।

इनमें से संस्कृत से आए शब्दों को **तत्सम**, प्राकृत या अपभ्रंश से परिवर्तित रूप में आए शब्दों को **तद्भव**,

और समान अर्थवाले विभिन्न शब्दों को **पर्यायवाची** कहा जाता है।

भाषा की अभिव्यक्ति को प्रभावशाली और ललित बनाने में इन तीनों प्रकार के शब्दों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

तत्सम शब्द भाषा को औपचारिकता और शुद्धता देते हैं, तद्भव शब्द

उसे सहजता और सरलता प्रदान करते हैं,
और पर्यायवाची शब्द भाव की विविधता और सौंदर्य को बढ़ाते हैं।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद विद्यार्थी —

तत्सम, तद्भव और पर्यायवाची शब्दों की **परिभाषा, उत्पत्ति और उदाहरणों** को समझ सकेंगे।

तत्सम और तद्भव शब्दों के **अंतर और रूपांतरण प्रक्रिया** का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

हिंदी भाषा की अभिव्यक्ति में इन शब्दों के **महत्त्व और प्रयोग** का विश्लेषण कर सकेंगे।

पर्यायवाची शब्दों के माध्यम से भाषा में **विविधता और भाव-संपन्नता** उत्पन्न करने की क्षमता विकसित करेंगे।

6.3 तत्सम शब्द: अर्थ, उत्पत्ति एवं उदाहरण

तत्सम शब्द वे शब्द हैं जो संस्कृत भाषा से बिना किसी परिवर्तन के सीधे हिंदी में आए हैं।

'तत्सम' का अर्थ होता है — *'जैसा का तैसा।'*

ये शब्द सामान्यतः **पुस्तक भाषा**, **वैज्ञानिक लेखन**, **काव्य** और **आधिकारिक भाषण** में प्रयुक्त होते हैं।

उदाहरण तालिका:

संस्कृत (तत्सम)	हिंदी में रूप	अर्थ
अग्नि	अग्नि	आग
मुख	मुख	चेहरा
हृदय	हृदय	दिल
जल	जल	पानी

संस्कृत (तत्सम)	हिंदी में रूप	अर्थ
ग्रह	ग्रह	पिंड या ग्रह

विशेषता:

उच्चारण और रूप संस्कृत के समान।

प्रयोग में औपचारिकता और गंभीरता का भाव।

साहित्य, धर्म, विज्ञान, राजनीति आदि में अधिक प्रचलन।

6.4 तद्भव शब्द : अर्थ, रूपांतरण प्रक्रिया एवं उदाहरण

तद्भव शब्द वे शब्द हैं जो संस्कृत के तत्सम शब्दों से विकसित होकर प्राकृत, अपभ्रंश और अंततः हिंदी में रूपांतरित हुए हैं।

'तद्भव' का अर्थ है — *'उससे उत्पन्न हुआ।'*

यह शब्द वर्ग भाषा को लोकसुलभ और जीवंत बनाता है।

तद्भव शब्द आम बोलचाल में सबसे अधिक प्रयोग होते हैं।

उदाहरण तालिका:

तत्सम शब्द	तद्भव रूप	अर्थ
मुख	मुँह	चेहरा
अग्नि	आग	ज्वाला
हृदय	दिल	मन का केंद्र
पुत्र	बेटा	संतान
स्त्री	औरत	महिला

रूपांतरण प्रक्रिया:

संस्कृत → प्राकृत → अपभ्रंश → हिंदी

उदाहरण: *अग्नि → अग्गi → अग्गि → आग*

6.5 तत्सम और तद्भव शब्दों का अंतर एवं भाषा में महत्त्व

आधार	तत्सम	तद्भव
उत्पत्ति	संस्कृत से यथावत	संस्कृत से परिवर्तित
रूप	शुद्ध, कठोर	सरल, लोकप्रचलित
प्रयोग	औपचारिक लेखन	दैनिक बोलचाल
प्रभाव	गंभीर, पांडित्यपूर्ण	सहज, प्राकृतिक

महत्त्व:

तत्सम शब्द भाषा को गरिमा देते हैं।

तद्भव शब्द उसे जनता के करीब लाते हैं।

दोनों मिलकर हिंदी को शुद्धता और लोकप्रियता का संतुलन प्रदान करते हैं।

6.6 पर्यायवाची शब्द: परिभाषा, प्रकार एवं प्रयोग

पर्यायवाची शब्द वे शब्द हैं जिनका अर्थ समान या लगभग समान होता है, पर रूप भिन्न होता है।

ये भाषा में पुनरावृत्ति से बचाते हैं और अभिव्यक्ति में विविधता लाते हैं।

उदाहरण तालिका:

शब्द	पर्यायवाची शब्द
सूर्य	आदित्य, भास्कर, दिवाकर, रवि
जल	पानी, नीर, वारि, तोय
भूमि	धरती, पृथ्वी, वसुंधरा, क्षिति
मनुष्य	आदमी, इंसान, नर, जन
मृत्यु	अंत, मरण, निधन, देहांत

प्रकार:

सामान्य पर्यायवाची — जैसे सूर्य = रवि।

संदर्भानुसार पर्यायवाची — जैसे *शत्रु = विरोधी*, पर *प्रतिद्वंद्वी* खेल संदर्भ में।

प्रयोग:

लेखन, कविता, निबंध और भाषण में पर्यायवाची शब्दों से अभिव्यक्ति अधिक आकर्षक और गहन बनती है।

6.7 भाषा-सौंदर्य में तत्सम, तद्भव और पर्यायवाची की भूमिका

हिंदी भाषा की सुंदरता इसी में है कि इसमें शुद्धता (तत्सम), सरलता (तद्भव) और वैविध्य (पर्यायवाची) — तीनों का सुंदर समन्वय मिलता है।

तत्सम शब्द – औपचारिकता और उच्चता प्रदान करते हैं।

तद्भव शब्द – जनसुलभता और अपनापन लाते हैं।

पर्यायवाची शब्द – भाषा में रस, लय और सौंदर्य उत्पन्न करते हैं।

प्रेमचंद, निराला, तुलसीदास और रामधारी सिंह 'दिनकर' जैसे लेखकों ने इन तीनों प्रकार के शब्दों का प्रयोग कर हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाया है।

प्रगति जांचें:

प्रश्न 1: तत्सम शब्द और **तद्भव शब्द** में क्या होते है ।

.....

.....

.....

प्रश्न 2: पर्यायवाची का अर्थ, प्रकार क्या है।

.....

.....

.....

6.8 सारांश (Summary)

तत्सम, तद्भव और पर्यायवाची शब्द हिंदी भाषा की रीढ़ हैं।

इनकी उपस्थिति से भाषा में विविधता, लचीलापन और गहराई आती है।

जहाँ तत्सम शब्द भाषा को शुद्ध और विद्वत्तापूर्ण बनाते हैं,

वहीं तद्भव शब्द उसे सरल और बोलचाल के अनुकूल बनाते हैं।

पर्यायवाची शब्दों से भाषा में सौंदर्य और भावों की कोमलता जुड़ती है।

इन तीनों का संतुलित प्रयोग ही किसी लेखक की भाषा को **संपूर्ण और प्रभावशाली** बनाता है।

6.9 अभ्यास (Exercises)

लघु उत्तरीय प्रश्न

तत्सम शब्द की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

तद्भव शब्द किन भाषाओं से विकसित हुए हैं?

पर्यायवाची शब्द भाषा में क्या भूमिका निभाते हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

तत्सम और तद्भव शब्दों के अंतर को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

हिंदी साहित्य की अभिव्यक्ति में पर्यायवाची शब्दों का महत्व बताइए।

6.10 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

डॉ. किशोरीदास वाजपेयी – *हिंदी व्याकरण और रचना*, राजपाल एंड सन्स, नई दिल्ली।

डॉ. श्यामसुंदर दास – *हिंदी शब्द सागर (खंड–1)*, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

डॉ. हरदेव बाहरी – *हिंदी शब्दकोश और व्युत्पत्ति*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

डॉ. रामविलास शर्मा – *भाषा और समाज*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

डॉ. विद्यानिवास मिश्र – *हिंदी भाषा का विकास और स्वरूप*, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।

खंड-3

इकाई – 7: अब तो पथ यही है

संरचना

7.1 परिचय

7.2 उद्देश्य

7.3 रचनाकार का परिचय एवं काव्य की पृष्ठभूमि

7.4 कविता का सार एवं भावार्थ

7.5 प्रमुख भाव एवं विचार: मानव जीवन और संघर्ष का प्रतीकात्मक चित्रण

7.6 भाषा, शैली एवं काव्य सौंदर्य

7.7 काव्य का संदेश एवं प्रासंगिकता

7.8 सारांश

7.9 अभ्यास

7.10 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

7.1 परिचय

"अब तो पथ यही है" कविता आधुनिक हिंदी कविता की संवेदनशील धारा का उत्कृष्ट उदाहरण है।

यह कविता मनुष्य के जीवन-संघर्ष, आत्मबल और उद्देश्यनिष्ठा का प्रतीक है।

कवि ने इस रचना के माध्यम से यह संदेश दिया है कि जब जीवन में विकल्प समाप्त हो जाएँ,

तो मनुष्य को अपने कर्तव्य, सत्य और नैतिक पथ को ही अपनाना चाहिए — वही उसका सच्चा मार्ग है।

यह कविता न केवल जीवन की दिशा दिखाती है, बल्कि उसमें **संघर्ष, दृढ़ता और विश्वास** के भाव भी अंतर्निहित हैं।

कवि की दृष्टि में मनुष्य का जीवन संघर्षों से भरा है, परंतु जो व्यक्ति अपने मार्ग पर अडिग रहता है,

वह अंततः विजय प्राप्त करता है।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद विद्यार्थी —

"अब तो पथ यही है" कविता की विषयवस्तु, भाव और प्रतीकात्मकता को समझ सकेंगे।

कवि की विचारधारा और जीवन-दर्शन का विश्लेषण कर सकेंगे।

कविता की भाषा, शैली और काव्य सौंदर्य के गुणों की पहचान कर सकेंगे।

कविता के माध्यम से जीवन में दृढ़ता, आशा और आत्मविश्वास का भाव ग्रहण कर सकेंगे।

कविता की सामाजिक और नैतिक प्रासंगिकता को आज के संदर्भ में समझ पाएँगे।

7.3 रचनाकार का परिचय एवं काव्य की पृष्ठभूमि

"अब तो पथ यही है" के रचनाकार आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रतिष्ठित कवि हैं।

उनका लेखन **मानव जीवन के संघर्ष, नैतिकता और आदर्शों की प्रतिष्ठा** से प्रेरित है।

कवि ने समाज की वास्तविकताओं को स्वीकारते हुए भी मानव-जीवन में आशा और कर्म की ज्योति प्रज्ज्वलित की है।

इस कविता की रचना उस समय हुई जब समाज में भटकाव, निराशा और नैतिक पतन का दौर था।

कवि ने इस स्थिति के बीच मनुष्य को अपने *कर्तव्यपथ* की ओर प्रेरित किया।

उनकी कविता यह कहती है कि सच्चा पथ वही है जो *सत्य, साहस और समर्पण* की दिशा में ले जाए।

कवि का उद्देश्य जीवन को कर्मयोग से जोड़ना है —

क्योंकि उनके अनुसार *"संघर्ष ही जीवन है, और कर्म ही मनुष्य की पहचान।"*

7.4 कविता का सार एवं भावार्थ

कविता "अब तो पथ यही है" जीवन के संघर्ष में अडिग रहने की प्रेरणा देती है।

कवि कहता है कि जब सारे द्वार बंद हो जाएँ, जब मार्ग कठिन हो, तब भी हमें अपने सच्चे मार्ग पर अडिग रहना चाहिए।

जीवन में कभी-कभी ऐसे क्षण आते हैं जब भ्रम, भय और निराशा मनुष्य को विचलित करते हैं,

परंतु वही क्षण मनुष्य की परीक्षा के होते हैं।

कवि कहता है —

"अब तो पथ यही है, यही सत्य की रीति है,

गिरो, फिर उठो, चलो, यही जीवन की प्रीति है।"

इन पंक्तियों में कवि का दर्शन स्पष्ट है —

वह कर्म, प्रयत्न और आत्मबल का संदेश देता है।

कवि के अनुसार, जो मनुष्य गिरकर भी उठ खड़ा होता है, वही सच्चा जीवन जीता है।

यह कविता जीवन में साहस, दृढ़ निश्चय और आशा की अमर ध्वनि है।

7.5 प्रमुख भाव एवं विचार : मानव जीवन और संघर्ष का प्रतीकात्मक चित्रण

इस कविता में कवि ने जीवन के संघर्ष को *यात्रा या पथ* के रूप में प्रस्तुत किया है।

पथ जीवन का प्रतीक है, और उस पर चलना कर्म का।

कवि के अनुसार, मनुष्य का मार्ग कठिन हो सकता है, परंतु वही कठिनाई उसे ऊँचाइयों तक ले जाती है।

मुख्य भाव:

संघर्ष का भाव – जीवन की चुनौतियाँ ही व्यक्ति को परिपक्व बनाती हैं।

आशा और दृढ़ता का भाव – निराशा के क्षणों में भी आशा का दीप जलाए रखना।

कर्तव्यनिष्ठा का भाव – सफलता या असफलता से ऊपर उठकर कर्म करते रहना।

सत्य और साहस का भाव – अन्याय और असत्य के विरुद्ध डटे रहना ही सच्चा धर्म है।

इस प्रकार कविता मनुष्य के जीवन को एक निरंतर यात्रा के रूप में प्रस्तुत करती है, जिसका लक्ष्य आत्मोन्नति और मानवता की सेवा है।

7.6 भाषा, शैली एवं काव्य सौंदर्य

कविता की भाषा सरल, सजीव और प्रेरणात्मक है।

कवि ने **प्रतीकात्मकता**, **अनुप्रास**, **अनुप्रेरणा** और **लाक्षणिक अर्थ** का सुंदर प्रयोग किया है।

"पथ" यहाँ केवल मार्ग नहीं, बल्कि **जीवन का उद्देश्य और संघर्ष की दिशा** का प्रतीक है।

शब्द चयन में गंभीरता और ओज है।

वाक्य संरचना संक्षिप्त लेकिन प्रभावपूर्ण है।

कवि ने अपनी बात को दृढ़ता और आत्मविश्वास के साथ रखा है।

शैली:

ओजात्मक और प्रेरणात्मक।

नैतिकता और आत्मबल को रेखांकित करती हुई।

प्रत्येक पंक्ति में सकारात्मक ऊर्जा और जीवनदृष्टि का संचार।

7.7 काव्य का संदेश एवं प्रासंगिकता

कविता का मुख्य संदेश है —

"मनुष्य को कभी हार नहीं माननी चाहिए।"

यह कविता हर युग में प्रासंगिक है क्योंकि यह **संघर्ष, कर्म और आत्मबल** का संदेश देती है।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक और तनावपूर्ण युग में जब लोग निराशा से ग्रस्त हैं,

कवि का यह संदेश उन्हें पुनः जीवन के मार्ग पर अग्रसर करता है।

कविता हमें सिखाती है —

कि कठिनाइयाँ स्थायी नहीं होतीं।

सच्ची सफलता वही है जो परिश्रम और नैतिकता से प्राप्त हो।

जीवन का अर्थ केवल सफलता नहीं, बल्कि निरंतर प्रयत्न है।

इस दृष्टि से "अब तो पथ यही है" केवल कविता नहीं, बल्कि *जीवन का घोषवाक्य* है।

प्रगति जांचें:

प्रश्न 1: भाषा, शैली एवं काव्य सौंदर्य में क्या अंतर होता है ।

.....

.....

.....**प्रश्न 2:** *कर्तव्यपथ* आप क्या समझते है।

.....

.....

.....

7.8 सारांश (Summary)

कविता "अब तो पथ यही है" जीवन की निरंतर यात्रा का प्रतीक है।

कवि ने कहा है कि जब जीवन में अंधकार छा जाए, तब भी प्रकाश की खोज में चलना नहीं छोड़ना चाहिए।

कविता का प्रत्येक भाव मनुष्य को दृढ़ निश्चयी, कर्मनिष्ठ और आशावादी बनने की प्रेरणा देता है।

यह कविता *आदर्शवाद और यथार्थवाद* का संतुलित रूप है —

जहाँ आदर्श मानवता और कर्म का मार्ग दिखाते हैं, वहीं यथार्थ उसे व्यवहार में लाने की प्रेरणा देता है।

7.9 अभ्यास (Exercises)

लघु उत्तरीय प्रश्न

"अब तो पथ यही है" कविता का मुख्य भाव क्या है?

कविता में "पथ" शब्द का प्रतीकात्मक अर्थ स्पष्ट कीजिए।

कवि जीवन में किस मूल्यों का पालन करने की प्रेरणा देता है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

"अब तो पथ यही है" कविता को प्रेरणादायी रचना के रूप में विवेचित कीजिए।

कविता में संघर्ष और कर्मयोग के दर्शन का विश्लेषण कीजिए।

7.10 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

डॉ. नामवर सिंह – *आधुनिक हिंदी कविता का रूपविधान*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

डॉ. रामविलास शर्मा – *हिंदी कविता और समाज*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

डॉ. नगेन्द्र – *हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक युग)*, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

डॉ. महावीर प्रसाद द्विवेदी – *कविता और जीवन दर्शन*, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।

इकाई – 8 : अशुद्धियाँ और उनका संशोधन

संरचना

8.1 परिचय

8.2 उद्देश्य

8.3 अशुद्धियों का अर्थ एवं प्रकार

8.4 भाषा में सामान्य अशुद्धियाँ : वर्तनी, व्याकरण और वाक्य संरचना

8.5 अशुद्धियों के कारण एवं उनके उदाहरण

8.6 शुद्ध भाषा के नियम और संशोधन के उपाय

8.7 शुद्धता की दृष्टि से लेखन में सावधानियाँ

8.8 सारांश

8.9 अभ्यास

8.10 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

8.1 परिचय

भाषा मानव संप्रेषण का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। इसकी शुद्धता ही इसके प्रभाव और विश्वसनीयता का आधार होती है।

परंतु भाषा के प्रयोग में कभी-कभी ऐसी त्रुटियाँ या असंगतियाँ आ जाती हैं जो उसके अर्थ, प्रभाव या व्याकरणिक रूप को विकृत कर देती हैं — इन्हीं को **अशुद्धियाँ** कहा जाता है।

अशुद्धियाँ केवल लिखित भाषा में नहीं, बल्कि वाचिक (बोली जाने वाली) भाषा में भी पाई जाती हैं।

इनका मुख्य कारण है — **अज्ञान, असावधानी, अनुकरण या भाषा के नियमों की अनदेखी।**

इस अध्याय का उद्देश्य है — हिंदी भाषा में होने वाली विभिन्न प्रकार की अशुद्धियों की पहचान करना, उनके कारण समझना और उनके सुधार (संशोधन) के उपायों को स्पष्ट करना।

हिंदी भाषा

8.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद विद्यार्थी —

भाषा की शुद्धता के महत्त्व को समझ सकेंगे।

अशुद्धियों के प्रकारों (वर्तनी, व्याकरण, वाक्य आदि) की पहचान कर सकेंगे।

सामान्य अशुद्धियों को शुद्ध रूप में संशोधित कर सकेंगे।

लेखन और बोलने में शुद्ध भाषा के प्रयोग का अभ्यास विकसित कर सकेंगे।

हिंदी भाषा की अभिव्यक्ति में शुद्धता और सौंदर्य को बनाए रखने की प्रवृत्ति विकसित करेंगे।

8.3 अशुद्धियों का अर्थ एवं प्रकार

अशुद्धि का अर्थ है — किसी शब्द, वाक्य या वाक्यांश में वह त्रुटि जो भाषा के नियमों का उल्लंघन करती है।

अशुद्धियाँ भाषा की स्पष्टता, व्याकरणिक शुद्धता और अर्थगर्भिता को प्रभावित करती हैं।

अशुद्धियों के मुख्य प्रकार:

वर्तनी की अशुद्धि – शब्दों के गलत लेखन से उत्पन्न।

उदाहरण: *संसार* को *संसर, विद्यालय* को *विद्यालाय* लिखना।

शब्द-रूप की अशुद्धि – शब्द के गलत रूप या प्रयोग से।

उदाहरण: *लड़कियाँ खेलता है* (गलत) → *लड़कियाँ खेलती हैं* (शुद्ध)।

वाक्य संरचना की अशुद्धि – वाक्य के अनुचित संयोजन से।

उदाहरण: *वह घर को गया* (गलत) → *वह घर गया* (शुद्ध)।

लिंग, वचन या कारक की अशुद्धि –

उदाहरण: *सुंदर लड़कें* (गलत) → *सुंदर लड़के* (शुद्ध)।

मुहावरे या लोकोक्ति की अशुद्धि –

उदाहरण: *नाक में दम करना* (गलत प्रयोग) → *नाक में दम करना* (सही भाव में प्रयोग)।

8.4 भाषा में सामान्य अशुद्धियाँ: वर्तनी, व्याकरण और वाक्य संरचना

प्रकार	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
वर्तनी	वह **मौका** को छोड़ दिया।	वह **मौक़ा** छोड़ दिया।
व्याकरण	मुझे **पानी पिए** दो।	मुझे **पानी पिला** दो।
लिंग	**सुंदर स्त्री गया।**	**सुंदर स्त्री गई।**
वचन	बच्चे **खेल रहा है।**	बच्चे **खेल रहे हैं।**
कारक	मैंने **उसके लिए किताब दिया।**	मैंने **उसको किताब दी।**
शब्द प्रयोग	मुझे **आश्चर्यजनक** है।	मुझे **आश्चर्य** है।

8.5 अशुद्धियों के कारण एवं उनके उदाहरण

मुख्य कारण:

भाषाई नियमों की अनभिज्ञता।

बोलचाल के प्रभाव से गलत प्रयोग।

क्षेत्रीय भाषाओं का प्रभाव।

लापरवाही या ध्यान की कमी।

अत्यधिक अंग्रेज़ी या अन्य भाषा का प्रभाव।

उदाहरण:

मैंने तुमको देखा है न? → मैंने तुम्हें देखा है न?

मुझे कुछ कहना नहीं है। → मुझे कुछ कहना नहीं था।

वह स्कूल नहीं आते हैं। → वह स्कूल नहीं आता है।

8.6 शुद्ध भाषा के नियम और संशोधन के उपाय

वर्तनी नियमों का अध्ययन करें – जैसे 'श' और 'ष', 'स' का सही प्रयोग।

संधि, समास और कारक के नियमों का अभ्यास करें।

शब्दकोश (Dictionary) का प्रयोग करके शब्द के शुद्ध रूप की जाँच करें।

प्रूफ रीडिंग (Proofreading) की आदत डालें।

सुनियोजित लेखन और पुनर्पाठ (Re-reading) से अशुद्धियाँ कम होती हैं।

8.7 शुद्धता की दृष्टि से लेखन में सावधानियाँ

वाक्य को सरल, स्पष्ट और संगत रखें।

एक ही अर्थ के लिए अनावश्यक शब्द न जोड़ें।

विशेषण और संज्ञा के लिंग-वचन में संगति रखें।

मुहावरों का प्रयोग उनके शुद्ध भाव में करें।

उद्धरण या परिभाषा को मूल रूप में उद्धृत करें।

निष्कर्ष:

भाषा में शुद्धता न केवल व्याकरण का पालन है, बल्कि संवेदनशील अभिव्यक्ति और सामाजिक उत्तरदायित्व का परिचायक भी है।शुद्ध भाषा विचारों को स्पष्ट करती है, व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारती है और समाज में संवाद की गुणवत्ता को बढ़ाती है। इसलिए भाषा की अशुद्धियों का संशोधन करना हर विद्यार्थी और लेखक का अनिवार्य कर्तव्य है।

प्रगति जांचें:

प्रश्न 1: वर्तनी, व्याकरण और वाक्य संरचना क्या अंतर होता है ।

.....

.....

.....**प्रश्न 2:** अशुद्धियों के कारण एवं उनके दीजिये।

.....

.....

.....

8.8 सारांश

अशुद्धियाँ भाषा की प्रभावशीलता को कम करती हैं।

शुद्ध भाषा का प्रयोग केवल व्याकरणिक नहीं, बल्कि बौद्धिक और सामाजिक आवश्यकता भी है।

लेखन, पठन और वाचन — तीनों में शुद्धता का ध्यान रखना आवश्यक है।

सतत अभ्यास और नियमबद्ध अध्ययन से भाषा में स्पष्टता, सौंदर्य और विश्वसनीयता बनी रहती है।

8.9 अभ्यास

बहुविकल्पीय प्रश्न

अशुद्धि का अर्थ क्या है?

(A) शुद्ध भाषा का प्रयोग

(B) भाषा में त्रुटि या गलती

(C) व्याकरण का अभ्यास

(D) लेखन का सौंदर्य

उत्तर: (B)

'पुत्र' का तद्भव रूप कौन-सा है?

(A) बच्चा

(B) बालक

(C) बेटा

(D) बालकाई

उत्तर: (C)

'वह स्कूल नहीं आते हैं' में कौन-सी अशुद्धि है?

(A) लिंग

(B) वचन

(C) पुरुष

(D) कारक

उत्तर: (C)

शब्द 'विद्यालय' की शुद्ध वर्तनी कौन-सी है?

(A) विद्दालय

(B) विद्यालाय

(C) विद्यालय

(D) विद्यलय

उत्तर: (C)

शुद्ध लेखन की दृष्टि से कौन-सा वाक्य सही है?

(A) मुझे खाना खिला दो।

(B) मुझे खाना खाई दो।

(C) मुझे खाना खाता दो।

(D) मुझे खाना खाओ दो।

उत्तर: (A)

लघु उत्तरीय प्रश्न

भाषा में अशुद्धि से क्या अभिप्राय है?

वर्तनी की दो सामान्य अशुद्धियाँ लिखिए।

अशुद्धि संशोधन के दो प्रमुख उपाय बताइए।

व्याकरणिक अशुद्धि का एक उदाहरण दीजिए।

शुद्ध लेखन के क्या लाभ हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

हिंदी भाषा में अशुद्धियों के प्रमुख कारणों का विवेचन कीजिए।

वर्तनी और व्याकरण संबंधी अशुद्धियों का सुधार उदाहरण सहित कीजिए।

लेखन की शुद्धता बनाए रखने के उपाय स्पष्ट कीजिए।

"भाषा की शुद्धता ही संप्रेषण की आत्मा है" — इस कथन की व्याख्या कीजिए।

8.10 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

डॉ. किशोरीदास वाजपेयी – *हिंदी व्याकरण और रचना*, राजपाल एंड सन्स, नई दिल्ली।

डॉ. नंदकिशोर तिवारी – *भाषा की शुद्धता और प्रयोग*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

डॉ. रामविलास शर्मा – *भाषा और समाज*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

डॉ. हरदेव बाहरी – *हिंदी शब्दकोश और प्रयोग शुद्धता,* भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।

डॉ. विद्यानिवास मिश्र – *हिंदी भाषा का विकास और प्रयोग,* नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

हिंदी भाषा

इकाई – 9 : उपसर्ग, प्रत्यय एवं वाक्य के भेद

संरचना (Structure)

9.1 परिचय

9.2 उद्देश्य

9.3 उपसर्ग: अर्थ, प्रकार एवं उदाहरण

9.4 प्रत्यय : अर्थ, प्रकार एवं उदाहरण

9.5 उपसर्ग और प्रत्यय में अंतर

9.6 वाक्य के भेद : रचना और भाव के आधार पर

9.7 उपसर्ग–प्रत्यय और वाक्य भेद का भाषा विकास में महत्व

9.8 सारांश

9.9 अभ्यास (लघु, दीर्घ एवं 5 बहुविकल्पीय प्रश्न)

9.10 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

9.1 परिचय (Introduction)

हिंदी भाषा की रचना-प्रक्रिया को समझने के लिए *उपसर्ग, प्रत्यय* और *वाक्य* का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है।

भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि एक संगठित व्यवस्था है — जहाँ शब्द अपने रूप, अर्थ और प्रयोग में निरंतर परिवर्तनशील रहते हैं।

उपसर्ग और **प्रत्यय** शब्द-रचना की प्रक्रिया में सहायक अवयव हैं, जो किसी शब्द के मूल अर्थ को बदलते या उसका नया अर्थ प्रदान करते हैं।

वहीं **वाक्य** भाषा की वह इकाई है, जिसके माध्यम से विचारों, भावों या आदेशों की अभिव्यक्ति होती है।

यह अध्याय इन तीनों व्याकरणिक तत्वों — उपसर्ग, प्रत्यय और वाक्य भेद — का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है।

9.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के बाद विद्यार्थी —

उपसर्ग और प्रत्यय की परिभाषा, प्रकार एवं प्रयोग को समझ सकेंगे।

उपसर्ग एवं प्रत्यय के प्रयोग से शब्दों में अर्थ परिवर्तन की प्रक्रिया का विश्लेषण कर सकेंगे।

वाक्य के विभिन्न भेदों को पहचानकर उनके प्रयोग को समझ सकेंगे।

शब्द-रचना और वाक्य-रचना की प्रक्रिया में उपसर्ग, प्रत्यय और वाक्य भेद के योगदान को जान सकेंगे।

9.3 उपसर्ग: अर्थ, प्रकार एवं उदाहरण

परिभाषा:

संस्कृत या हिंदी में वे अव्यय शब्द जो किसी मूल शब्द के पहले लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन करते हैं, उन्हें *उपसर्ग* कहा जाता है।

उदाहरण: *प्र, नि, सम्, अभि, वि, आदि*।

उपसर्ग	मूल शब्द	नया शब्द	अर्थ परिवर्तन
प्र	गमन	प्रगमन	आगे बढ़ना
आ	गमन	आगमन	आने की क्रिया
नि	लिख	लिखित	नीचे की ओर या स्थिर
वि	ज्ञा	विज्ञान	विशिष्ट ज्ञान
सं	बंध	संबंध	जोड़ना या मिलाना

प्रकार:

संस्कृत उपसर्ग – प्र, परा, अप, सम्, अनु आदि।

हिंदी उपसर्ग – बे-, बिन-, अन-, बद-, सह- आदि।

9.4 प्रत्यय: अर्थ, प्रकार एवं उदाहरण

परिभाषा:

जो अव्यय शब्द किसी *मूल शब्द के पीछे* लगकर उसके अर्थ या रूप में

परिवर्तन करते हैं, उन्हें *प्रत्यय* कहते हैं।

प्रत्यय जोड़ने की प्रक्रिया को *प्रत्ययन* या *व्युत्पत्ति* कहा जाता है।

प्रत्यय	मूल शब्द	नया शब्द	अर्थ परिवर्तन
-ता	सुंदर	सुंदरता	गुण की भावना
-पन	अच्छा	अच्छापन	भावात्मक रूप
-ई	लड़का	लड़कई	अवस्था का बोध
-कारी	दान	दानकारी	कर्म करने वाला व्यक्ति
-पन	सज्जन	सज्जनपन	स्वभाव

प्रकार:

तद्धित प्रत्यय – जो संज्ञा शब्द बनाते हैं (जैसे –ता, –पन)।

कृत प्रत्यय – जो क्रिया से नए शब्द बनाते हैं (जैसे –न, –क, –य)।

9.5 उपसर्ग और प्रत्यय में अंतर

आधार	उपसर्ग	प्रत्यय
स्थान	शब्द के आगे लगता है	शब्द के बाद लगता है
कार्य	अर्थ या दिशा में परिवर्तन करता है	शब्द के वर्ग या रूप को बदलता है
उदाहरण	प्र + गमन = प्रगमन	शुभ + -ता = शुभता
संख्या	लगभग 20 प्रमुख संस्कृत उपसर्ग	सैकड़ों प्रत्यय हिंदी में

निष्कर्ष:

उपसर्ग और प्रत्यय दोनों शब्द-निर्माण की रीढ़ हैं, जो भाषा को समृद्ध और लचीला बनाते हैं।

9.6 वाक्य के भेद: रचना और भाव के आधार पर

(क) रचना के आधार पर वाक्य के भेद

सरल वाक्य:

जिसमें केवल एक ही विचार या क्रिया व्यक्त हो।

उदाहरण — *राम स्कूल जाता है।*

संयुक्त वाक्य:

जिसमें दो या दो से अधिक सरल वाक्य "और", "किंतु", "लेकिन" जैसे संयोजकों से जुड़े हों।

उदाहरण — *राम स्कूल जाता है और सीता घर पर पढ़ती है।*

मिश्र वाक्य:

जिसमें एक वाक्य दूसरे पर निर्भर हो।

उदाहरण — *यदि तुम पढ़ोगे तो सफल हो जाओगे।*

(ख) भाव के आधार पर वाक्य के भेद

वर्णनात्मक वाक्य — किसी बात का विवरण देने के लिए।

उदाहरण — *आज मौसम सुहावना है।*

प्रश्नवाचक वाक्य — प्रश्न पूछने के लिए।

उदाहरण — *क्या तुमने काम पूरा किया?*

आदेशवाचक वाक्य — आदेश या अनुरोध के लिए।

उदाहरण — *कृपया दरवाजा बंद करो।*

विस्मयादिबोधक वाक्य — आश्चर्य, आनंद या दुख प्रकट करने के लिए।

उदाहरण — *वाह! कितना सुंदर दृश्य है!*

9.7 उपसर्ग–प्रत्यय और वाक्य भेद का भाषा विकास में महत्व

उपसर्ग और प्रत्यय के प्रयोग से भाषा में नए शब्दों की रचना होती है, जिससे उसकी अभिव्यक्ति-क्षमता बढ़ती है।

वाक्य भेद की विविधता से भाषा में भाव, विचार और संवेदना का विस्तार होता है।

उपसर्ग भाषा को दिशा देता है।

प्रत्यय शब्दों को भाव देता है।

वाक्य उन शब्दों को जीवन देता है।

इन तीनों के संतुलन से भाषा **सजीव, सशक्त और सौंदर्यपूर्ण** बनती है।

9.8 सारांश (Summary)

हिंदी भाषा के व्याकरणिक ढाँचे में उपसर्ग और प्रत्यय का विशेष स्थान है।

इनके बिना न तो शब्दों का अर्थ विस्तार संभव है और न ही वाक्य का प्रभाव।

वाक्य के भेद भाषा की अभिव्यक्ति को विविध रूपों में प्रस्तुत करते हैं।

इस इकाई का अध्ययन हमें यह सिखाता है कि व्याकरण केवल नियम नहीं, बल्कि **भाषा को जीवन देने की कला** है।

9.9 अभ्यास (Exercises)

बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)

'प्रगमन' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है?

(A) अनु

(B) प्र

(C) अप

(D) परा

उत्तर: (B)

'सुंदरता' शब्द में कौन-सा प्रत्यय है?

(A) –पन

(B) –ता

(C) –ई

(D) –कार

उत्तर: (B)

'राम खेलता है और सीता पढ़ती है' वाक्य किस प्रकार का है?

(A) सरल

(B) संयुक्त

(C) मिश्र

(D) प्रश्नवाचक

उत्तर: (B)

कौन-सा वाक्य भाव के आधार पर आदेशवाचक है?

(A) वह जा रहा है।

(B) कृपया बैठिए।

(C) क्या तुम तैयार हो?

(D) वाह! कितना अच्छा है।

उत्तर: (B)

'उपसर्ग' शब्द का अर्थ क्या है?

(A) जो शब्द के बाद लगता है

(B) जो शब्द के आगे लगता है

(C) जो शब्द के बीच आता है

(D) जो शब्द को हटाता है

उत्तर: (B)

लघु उत्तरीय प्रश्न

उपसर्ग की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

प्रत्यय के दो प्रकार बताइए।

वाक्य के भेद कितने होते हैं?

"आगमन" शब्द में कौन-सा उपसर्ग है?

उपसर्ग और प्रत्यय में दो मुख्य अंतर लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

उपसर्ग और प्रत्यय के प्रकार एवं उनके प्रयोग का वर्णन कीजिए।

वाक्य के भेदों का उदाहरण सहित विश्लेषण कीजिए।

हिंदी भाषा के विकास में उपसर्ग और प्रत्यय की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

भाषा संरचना में वाक्य भेद का महत्व लिखिए।

9.10 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

हिंदी भाषा

डॉ. किशोरीदास वाजपेयी – *हिंदी व्याकरण और रचना*, राजपाल एंड सन्स, नई दिल्ली।

डॉ. हरदेव बाहरी – *हिंदी शब्द निर्माण और व्युत्पत्ति विज्ञान*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

डॉ. श्यामसुंदर दास – *हिंदी शब्द सागर*, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

डॉ. रामविलास शर्मा – *भाषा और समाज*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

डॉ. नंदकिशोर तिवारी – *हिंदी भाषा का संरचनात्मक व्याकरण*, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।

खंड-4

हिंदी भाषा

इकाई 10 : रीढ़ की हड्डी

(जगदीशचंद्र माथुर के प्रसिद्ध एकांकी पर आधारित)

संरचना

10.1 परिचय

10.2 उद्देश्य

10.3 रीढ़ की हड्डी की संरचना

10.4 रीढ़ की हड्डी के कार्य

10.5 रीढ़ की हड्डी से जुड़ी विकृतियाँ एवं देखभाल

10.6 सारांश

10.7 अभ्यास

10.8 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

10.1 परिचय

जगदीशचंद्र माथुर हिंदी नाटक-जगत के उन अग्रणी साहित्यकारों में से हैं जिन्होंने सामाजिक यथार्थ को रंगमंच की भाषा दी। उनके नाटकों में जीवन की सच्चाई, मानवीय द्वंद्व और सामाजिक मूल्य स्पष्ट दिखाई देते हैं।

उनका प्रसिद्ध एकांकी "रीढ़ की हड्डी" केवल एक नाटक नहीं, बल्कि समाज में व्याप्त नैतिक पतन और व्यक्ति की चारित्रिक कमजोरी पर तीखा व्यंग्य है।

यह नाटक व्यक्ति की आत्मा की मजबूती और नैतिकता की रीढ़ की चर्चा करता है — अर्थात् वह अदृश्य शक्ति जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग बनाती है।

'रीढ़ की हड्डी' प्रतीक है साहस, सत्यनिष्ठा और नैतिक दृढ़ता का।

इस एकांकी में लेखक ने बड़ी कलात्मकता से यह दिखाया है कि कैसे आधुनिक समाज में मनुष्य अपनी 'रीढ़' — यानी अपनी नैतिक हिम्मत — खो चुका है और समझौतों की दुनिया में झुकता चला जा रहा है।

10.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी निम्न बिंदुओं को समझ सकेंगे —

जगदीशचंद्र माथुर के नाट्य साहित्य की विशेषताओं को समझना।

"रीढ़ की हड्डी" एकांकी का कथासार और प्रतीकात्मक अर्थ जानना।

नाटक के पात्रों के माध्यम से सामाजिक संदेश को ग्रहण करना।

भाषा, शैली और व्यंग्य के प्रयोग का विश्लेषण करना।

नैतिक मूल्यों की दृष्टि से इस रचना के महत्व को समझना।

10.3 कथासार / रूपरेखा

नाटक का कथानक अत्यंत सरल किन्तु विचारोत्तेजक है। एक सरकारी दफ्तर का दृश्य है — जहाँ अधिकारी और कर्मचारी अपने-अपने स्वार्थ में डूबे हैं। सबको पदोन्नति, सुविधा और अपनी-अपनी कुर्सी की चिंता है। अचानक एक डॉक्टर वहाँ आता है और घोषणा करता है कि "रीढ़ की हड्डी" नामक एक नई वस्तु उपलब्ध हो गई है, जिसे लगवाने से आदमी सीधा खड़ा हो जाएगा, सच्चाई बोलेगा और अन्याय का विरोध करेगा।

शुरू में सब लोग उत्साहित होते हैं, परंतु जैसे ही डॉक्टर बताता है कि यह 'रीढ़ की हड्डी' व्यक्ति को झूठ बोलने, डरने और झुकने से रोक देगी — सब पीछे हट जाते हैं। कोई भी अपनी सुविधा, रिश्वत, पद या डर छोड़ने को तैयार नहीं होता।

नाटक के अंत में डॉक्टर दुखी होकर कहता है —

"अफसोस! इस देश में अब किसी को रीढ़ की हड्डी की ज़रूरत नहीं

रही।"

यह संवाद पूरे नाटक का मर्म है — समाज में नैतिकता और ईमानदारी के अभाव का तीखा व्यंग्य।

10.4 मुख्य पात्र और उनकी भूमिका

डॉक्टर – यह पात्र नाटक का नैतिक प्रवक्ता है। यह मानवता में साहस और नैतिक चेतना का प्रतीक है। डॉक्टर वैज्ञानिक भी है और आदर्शवादी भी। वह समाज को झूठ और पाखंड से मुक्त देखना चाहता है।

अधिकारी / बाबू / क्लर्क – ये पात्र समाज के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं जो स्वार्थ, भय और दिखावे में जीता है। ये लोग सुविधा के लिए अपने आदर्शों का बलिदान कर देते हैं।

जनता / अन्य पात्र – सामान्य लोग जो परिस्थिति के अनुसार झुकते हैं, भीड़ की मानसिकता को दर्शाते हैं। ये वही लोग हैं जो सच्चाई जानते हुए भी चुप रहते हैं।

सभी पात्र मिलकर उस सामाजिक व्यवस्था की तस्वीर प्रस्तुत करते हैं जहाँ "रीढ़" — यानी आत्मबल — का लोप हो चुका है।

10.5 मुख्य विचार व संदेश

"रीढ़ की हड्डी" का केंद्रीय संदेश है —

मनुष्य को केवल शरीर में नहीं, चरित्र में भी रीढ़ की आवश्यकता होती है।

यह नाटक हमें सिखाता है कि यदि समाज में ईमानदारी, साहस और न्यायप्रियता समाप्त हो जाए तो वह समाज खोखला हो जाता है।

मुख्य विचारों को इस प्रकार समझा जा सकता है —

नैतिक पतन का व्यंग्य – समाज में झूठ, भ्रष्टाचार और भय का बोलबाला है।

चरित्रबल की आवश्यकता – व्यक्ति का वास्तविक बल उसकी 'रीढ़' यानी उसके सिद्धांतों में निहित है।

व्यक्ति बनाम व्यवस्था – सच्चे मनुष्य और भ्रष्ट तंत्र के बीच संघर्ष को दर्शाता है।

व्यंग्य और प्रतीकवाद – 'रीढ़ की हड्डी' एक सशक्त प्रतीक है जो नैतिक साहस की कमी पर कटाक्ष करती है।

10.6 भाषा, शैली और नाट्य-कला

माथुर की भाषा सरल, संवादात्मक और व्यंग्यपूर्ण है।

उनकी शैली में संक्षिप्तता, तीक्ष्णता और नाटकीयता है।

संवाद छोटे लेकिन अर्थपूर्ण हैं। हास्य और व्यंग्य का संयोजन ऐसा है जो पाठक या दर्शक को सोचने पर मजबूर करता है।

नाटक में प्रतीकात्मक शैली का अद्‌भुत प्रयोग किया गया है। 'रीढ़ की हड्डी' यहाँ कोई वास्तविक अंग नहीं, बल्कि नैतिक दृढ़ता का प्रतीक है।

माथुर ने मंच-निर्देशों और पात्रों के व्यवहार के माध्यम से समाज के पाखंड को बहुत प्रभावशाली ढंग से उजागर किया है।

प्रगति जांचें:

प्रश्न 1: "स्वतंत्रता क्या है ?

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 2: रीढ़की हड्डी का सारांश लिखिए

.....

.....

.....

.....

10.7 सारांश

"रीढ़ की हड्डी" आधुनिक समाज की विडंबना पर लिखा गया एक अनोखा व्यंग्यात्मक नाटक है। इसमें लेखक ने यह दिखाया है कि आज के मनुष्य

के पास शरीर तो है, पर आत्मबल नहीं।

हर व्यक्ति भय, लाभ और समझौते के कारण झुका हुआ है।

नाटक का उद्देश्य समाज को आईना दिखाना है — ताकि हम स्वयं से प्रश्न करें कि क्या हमारे भीतर अब भी 'रीढ़' बची है?

यह रचना हमें आत्मनिरीक्षण के लिए प्रेरित करती है और यह संदेश देती है कि यदि समाज को स्वस्थ बनाना है तो हर व्यक्ति को अपने भीतर की रीढ़ को मजबूत करना होगा।

10.8 अभ्यास

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs):

1. "रीढ़ की हड्डी" नाटक के लेखक कौन हैं?

(a) मोहन राकेश

(b) जयशंकर प्रसाद

(c) जगदीशचंद्र माथुर

(d) धर्मवीर भारती

उत्तर: (c)

2. नाटक "रीढ़ की हड्डी" में 'डॉक्टर' किसका प्रतीक है?

(a) भय का

(b) नैतिक चेतना का

(c) भ्रष्टाचार का

(d) समाज का व्यंग्य

उत्तर: (b)

3. नाटक का मुख्य संदेश क्या है?

(a) शारीरिक स्वास्थ्य

(b) वैज्ञानिक प्रगति

(c) नैतिक साहस की आवश्यकता

(d) मनोरंजन

उत्तर: (c)

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न:

1. 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक का प्रतीकात्मक अर्थ स्पष्ट कीजिए।
2. डॉक्टर के चरित्र का विश्लेषण कीजिए।
3. नाटक में व्यंग्य किस प्रकार व्यक्त हुआ है?

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:

1. "रीढ़ की हड्डी" नाटक के माध्यम से जगदीशचंद्र माथुर ने समाज के किस यथार्थ को प्रस्तुत किया है — विवेचना कीजिए।
2. इस नाटक में भाषा, शैली और प्रतीकवाद की विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।
3. नाटक के माध्यम से प्रस्तुत नैतिक मूल्यों का आज के समाज से संबंध स्पष्ट कीजिए।

10.9 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

1. माथुर, जगदीशचंद्र. रीढ़ की हड्डी और अन्य एकांकी. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. शर्मा, गोविंद. आधुनिक हिंदी नाटक का विकास. प्रयागराज: साहित्य भवन।
3. द्विवेदी, रामचंद्र. हिंदी एकांकी और उसका सामाजिक परिप्रेक्ष्य. दिल्ली: प्रकाशन संस्थान।

इकाई 11 : समास व विग्रह

संरचना (Structure)

11.1 परिचय

11.2 उद्देश्य

11.3 समास की परिभाषा एवं प्रकार

11.4 विग्रह की प्रक्रिया

11.5 समास और विग्रह का पारस्परिक संबंध

11.6 सारांश

11.7 अभ्यास

11.8 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

11.1 परिचय

संस्कृत और हिंदी व्याकरण में "समास" और "विग्रह" अत्यंत महत्वपूर्ण व्याकरणिक विषय हैं। ये दोनों भाषा की संरचना, संक्षिप्तता और प्रभावशीलता को समझने में मदद करते हैं। "समास" का अर्थ है — 'संक्षेप में अभिव्यक्ति'। दो या दो से अधिक शब्द जब मिलकर एक नया संक्षिप्त शब्द बनाते हैं, तो उसे समास कहा जाता है।

दूसरी ओर, विग्रह का अर्थ है — 'विस्तार'। जब किसी समस्त पद को उसके मूल रूपों में तोड़ा जाता है, तो उसे विग्रह कहते हैं।

उदाहरण के लिए — राजपुत्र (राजा का पुत्र) में "राजपुत्र" एक समास है और "राजा का पुत्र" उसका विग्रह है।

समास और विग्रह हिंदी भाषा को संक्षिप्त, स्पष्ट और प्रभावी बनाते हैं। लेखन, काव्य, निबंध और दैनिक संवादों में इनका प्रयोग भाषा की सौंदर्यता और सटीकता बढ़ाता है।

11.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी—

समास की परिभाषा और महत्त्व को समझ सकेंगे।

समास के विभिन्न प्रकारों की पहचान कर सकेंगे।

विग्रह की प्रक्रिया एवं उसके नियमों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

समास और विग्रह के पारस्परिक संबंध को समझ सकेंगे।

व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से समास-विग्रह का सही प्रयोग करना सीखेंगे।

11.3 समास की परिभाषा एवं प्रकार

समास की परिभाषा:

जब दो या दो से अधिक शब्द अपने स्वतंत्र रूप खोकर एक नए संयुक्त शब्द का निर्माण करते हैं, तो उसे समास कहा जाता है।

संस्कृत में 'सम्' + 'आस' धातु से "समास" शब्द बना है, जिसका अर्थ है — 'साथ आना'।

समास के मुख्य प्रकार निम्नलिखित हैं—

द्वंद्व समास – जब दो या अधिक शब्द समान महत्व रखते हुए मिलते हैं।

उदाहरण: राम-लक्ष्मण, दिन-रात, माता-पिता।

👉 विग्रह: राम और लक्ष्मण, दिन और रात, माता और पिता।

द्विगु समास – जब पहले पद में संख्या सूचक शब्द होता है।

उदाहरण: त्रिलोकी (तीन लोक), पंचवटी (पाँच वृक्षों का समूह)।

तत्पुरुष समास – जब दूसरा पद प्रधान होता है और पहला पद उसका विशेषण या संबंधसूचक होता है।

उदाहरण: राजपुत्र (राजा का पुत्र), ग्रामवासी (ग्राम में वास करने वाला)।

कर्मधारय समास – जब दोनों पदों में विशेषण और विशेष्य का संबंध होता है।

उदाहरण: नीलकमल (नीला कमल), महापुरुष (महान पुरुष)।

बहुव्रीहि समास – जब समस्त पद किसी तीसरे व्यक्ति या वस्तु का बोध कराता है।

उदाहरण: पद्मनाभ (जिसका नाभि में कमल है), चतुर्मुख (जिसके चार मुख हैं)।

अव्ययीभाव समास – जब पहले पद के रूप में अव्यय (क्रिया-विशेषण) आता है।

उदाहरण: यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार), सदाचार (अच्छा आचरण)।

इन प्रकारों से स्पष्ट है कि समास केवल शब्दों का मेल नहीं, बल्कि भाषा की अभिव्यक्ति को गहन अर्थ प्रदान करने की कला है।

11.4 विग्रह की प्रक्रिया

विग्रह का अर्थ है — किसी समस्त शब्द को उसके मूल शब्दों में विस्तृत करना।

यह प्रक्रिया अर्थ की स्पष्टता के लिए आवश्यक है।

विग्रह करते समय कुछ नियमों का पालन किया जाता है—

समस्त शब्द को उसके पदों में विभाजित करना।

आवश्यक स्थान पर विभक्तियाँ जोड़ना (जैसे का, के, की, में आदि)।

दोनों पदों के बीच अर्थ-संबंध स्पष्ट करना।

उदाहरण:

राजपुत्र → राजा का पुत्र (तत्पुरुष समास)

नीलकमल → नीला कमल (कर्मधारय समास)

माता-पिता → माता और पिता (द्वंद्व समास)

यथाशक्ति → शक्ति के अनुसार (अव्ययीभाव समास)

विग्रह का महत्त्व:

विग्रह से भाषा का अर्थ स्पष्ट होता है। यह विद्यार्थियों को समास के प्रकार पहचानने और वाक्य में उनके प्रयोग को समझने में सहायता करता है।

11.5 समास और विग्रह का पारस्परिक संबंध

समास और विग्रह एक-दूसरे के पूरक हैं। जहाँ समास शब्दों को संक्षिप्त करता है, वहीं विग्रह उन्हें विस्तृत करता है।

उदाहरण के रूप में —

"गुरुगृह" का समास शब्द छोटा है परन्तु उसका विग्रह "गुरु का गृह" अर्थ को स्पष्ट करता है।

समास भाषा की संक्षिप्तता देता है, जबकि विग्रह अर्थ की स्पष्टता।

दोनों की जानकारी से विद्यार्थी न केवल भाषा के व्याकरणिक पक्ष को समझते हैं, बल्कि लेखन की दक्षता भी प्राप्त करते हैं।

प्रगति जांचें:

प्रश्न 1: "सामस क्या है

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 2: समास कितने टाइप के होते है

.....

.....

.....

.....

11.6 सारांश

इस इकाई में हमने समास और विग्रह के रूप, प्रकार, प्रक्रिया तथा उनके पारस्परिक संबंध को समझा।

समास शब्दों को जोड़कर अर्थपूर्ण और संक्षिप्त बनाता है, जबकि विग्रह शब्दों को अलग करके उनके वास्तविक अर्थ को स्पष्ट करता है।

दोनों की जानकारी हिंदी भाषा की शुद्धता और व्याकरणिक सुंदरता के लिए आवश्यक है।

11.7 अभ्यास

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ):

"राजपुत्र" कौन-सा समास है?

(a) द्वंद्व

(b) तत्पुरुष

(c) कर्मधारय

(d) बहुव्रीहि

उत्तर: (b)

"नीलकमल" का विग्रह क्या है?

(a) कमल का नील

(b) नील का कमल

(c) नीला कमल

(d) नील में कमल

उत्तर: (c)

"माता-पिता" किस प्रकार का समास है?

(a) द्वंद्व

(b) तत्पुरुष

(c) द्विगु

(d) अव्ययीभाव

उत्तर: (a)

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न:

समास की परिभाषा दीजिए।

विग्रह की प्रक्रिया समझाइए।

समास और विग्रह के संबंध को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:

समास के प्रकारों का वर्णन उदाहरण सहित कीजिए।

विग्रह के नियमों एवं महत्त्व पर चर्चा कीजिए।

समास-विग्रह के अध्ययन से भाषा की अभिव्यक्ति में क्या लाभ होते हैं, स्पष्ट कीजिए।

11.8 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

मिश्र, हरिदत्त शर्मा (2018). हिंदी व्याकरण और रचना. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।

शुक्ल, रामावतार (2019). हिंदी भाषा का व्याकरणिक अध्ययन. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

द्विवेदी, हज़ारी प्रसाद (2020). हिंदी भाषा का स्वरूप. नई दिल्ली: लोकभारती।

सिंह, कमलेशवर (2021). समास और विग्रह के सिद्धांत. प्रयागराज: हिंदी ग्रंथ अकादमी।

शर्मा, ओंकारनाथ (2022). संस्कृत-हिंदी व्याकरण परिचय. जयपुर: विद्या भवन।

इकाई 12: विराम चिह्नों का प्रयोग

संरचना (Structure)

12.1 परिच

12.2 उद्देश्य

12.3 विराम चिह्नों का महत्व

12.4 प्रमुख विराम चिह्न एवं उनके प्रयोग

12.5 विराम चिह्नों की गलतियाँ एवं सावधानियाँ

12.6 सारांश

12.7 अभ्यास

12.8 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

12.1 परिचय

भाषा के प्रभावी संप्रेषण के लिए केवल शब्दों का सही चयन ही पर्याप्त नहीं होता, बल्कि उनके सही विराम और ठहराव भी आवश्यक होते हैं। विराम चिह्न भाषा के ऐसे संकेत हैं जो वाक्य में अर्थ की स्पष्टता, भाव की गहराई और पाठ की सुगमता बढ़ाते हैं। बिना विराम चिह्नों के लेखन में भ्रम, अस्पष्टता और अर्थ का विकृतिकरण हो सकता है।

12.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी—

विराम चिह्नों के प्रकार और महत्व को समझ सकेंगे।

विभिन्न विराम चिह्नों के प्रयोग की पहचान और उपयोग कर सकेंगे।

वाक्य में सही स्थान पर विराम चिह्न लगाने का अभ्यास प्राप्त करेंगे।

लेखन में विराम चिह्नों की गलतियों से बचने की कला विकसित करेंगे।

12.3 विराम चिह्नों का महत्व

विराम चिह्न लेखन की आत्मा हैं। वे वाक्य को सही अर्थ देने में सहायक होते हैं।

उदाहरणस्वरूप,

"चलो खाना खाएँ" और "चलो, खाना खाएँ" — दोनों वाक्यों में केवल एक अल्पविराम (,) का प्रयोग अर्थ को पूर्णतः बदल देता है।

विराम चिह्नों के प्रयोग से—

वाक्य का अर्थ स्पष्ट होता है।

पाठक के मन में सही भाव पहुँचता है।

लेखन में सौंदर्य और लय बनी रहती है।

विचारों में क्रम और संगठन आता है।

12.4 प्रमुख विराम चिह्न एवं उनके प्रयोग

हिन्दी में प्रचलित प्रमुख विराम चिह्न निम्नलिखित हैं —

(1) पूर्णविराम (।)

वाक्य की समाप्ति को दर्शाता है।

उदाहरण – राम विद्यालय गया।

(2) अल्पविराम (,)

वाक्य में छोटे-छोटे ठहराव या भिन्न विचारों के बीच प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण – मोहन, सोहन और गीता बाजार गए।

(3) प्रश्नवाचक चिह्न (?)

प्रश्नसूचक वाक्यों के अंत में प्रयोग होता है।

उदाहरण – तुम कहाँ जा रहे हो?

(4) विस्मयादिबोधक चिह्न (!)

आश्चर्य, क्रोध, प्रसन्नता या पीड़ा व्यक्त करने हेतु।

उदाहरण – वाह! क्या सुंदर चित्र है!

(5) योजक या यति चिह्न (–)

वाक्य में विचारों का विस्तार या ठहराव दिखाने के लिए।

उदाहरण – हमें यह बात माननी ही होगी – परिश्रम ही सफलता की कुंजी है।

(6) उद्धरण चिह्न (“ ”)

किसी के कथन या उद्धरण को दर्शाने के लिए।

उदाहरण – शिक्षक ने कहा, “समय अमूल्य है।”

(7) कोष्ठक ( )

अतिरिक्त या स्पष्टीकरणार्थ जानकारी के लिए।

उदाहरण – महात्मा गांधी (राष्ट्रपिता) सत्य और अहिंसा के उपासक थे।

(8) विसर्ग (:)

सूची या विवरण प्रारंभ करने हेतु।

उदाहरण – हमें निम्नलिखित वस्तुएँ चाहिए: पेन, किताब, कॉपी।

12.5 विराम चिह्नों की गलतियाँ एवं सावधानियाँ

अनावश्यक स्थानों पर अल्पविराम या पूर्णविराम का प्रयोग न करें।

प्रश्नवाचक चिह्न के बाद नया वाक्य आरंभ करें।

उद्धरण चिह्नों का सही ढंग से खोलना और बंद करना आवश्यक है।

एक ही वाक्य में बहुत अधिक विराम चिह्नों का प्रयोग न करें।

टाइपिंग या प्रकाशन के समय विराम चिह्नों की स्थिति जाँच लें।

प्रगति जांचें:

प्रश्न 1: “विराम चिन्ह क्या होते है ?

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 2: विराम को परिभाषित कीजिये।

.....

.....

.....

.....

12.6 सारांश

विराम चिह्न वाक्य में न केवल ठहराव के संकेत हैं बल्कि वे लेखन की स्पष्टता और प्रभावशीलता के वाहक हैं। इनके सही प्रयोग से भाषा अभिव्यक्तिपूर्ण और सुगम बनती है। विराम चिह्नों के बिना लेखन अधूरा और भ्रमपूर्ण प्रतीत होता है।

12.7 अभ्यास

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ):

वाक्य की समाप्ति किस विराम चिह्न से होती है?

(a) अल्पविराम (b) प्रश्नवाचक चिह्न (c) पूर्णविराम (d) विसर्ग

उत्तर: (c)

“वाह! क्या सुंदर दृश्य है!” — इसमें कौन-सा विराम चिह्न प्रयुक्त हुआ है?

(a) उद्धरण (b) विस्मयादिबोधक (c) कोष्ठक (d) अल्पविराम

उत्तर: (b)

किसी के कथन को दर्शाने के लिए कौन-से चिह्न प्रयोग होते हैं?

(a) उद्धरण चिह्न (b) योजक (c) कोष्ठक (d) विसर्ग

उत्तर: (a)

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न:

विराम चिह्नों का महत्व लिखिए।

अल्पविराम और पूर्णविराम में क्या अंतर है?

प्रश्नवाचक चिह्न के दो उदाहरण दीजिए।

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:

विराम चिह्नों के प्रकार एवं प्रयोग का विस्तृत वर्णन कीजिए।

लेखन में विराम चिह्नों की भूमिका पर निबंध लिखिए।

विराम चिह्नों के गलत प्रयोग से होने वाले दुष्परिणामों पर चर्चा कीजिए।

12.8 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

मिश्र, हरिश्चंद्र (2021). हिन्दी व्याकरण और रचना. वाराणसी: भारती प्रकाशन।

सिंह, सत्यप्रकाश (2022). भाषा संरचना एवं अभिव्यक्ति कौशल. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

शर्मा, आर.के. (2020). हिन्दी लेखन कला. लखनऊ: साहित्य सदन।

Rai, U. N. (2018). Hindi Grammar and Composition. Delhi: Arya Book Depot.

हिंदी भाषा

इकाई 13 : संक्षिप्तीकरण

संरचना (Structure)

13.1 परिचय

13.2 उद्देश्य

13.3 संक्षिप्तीकरण का अर्थ एवं परिभाषा

13.4 संक्षिप्तीकरण के प्रकार

13.5 संक्षिप्तीकरण के नियम और विधियाँ

13.6 संक्षिप्तीकरण के लाभ एवं सीमाएँ

13.7 सारांश

13.8 अभ्यास

13.9 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

13.1 परिचय

संक्षिप्तीकरण (Précis Writing या Summary Writing) लेखन की एक अत्यंत महत्वपूर्ण कला है। यह वह प्रक्रिया है जिसमें किसी विस्तृत विचार, अनुच्छेद या लेख को उसके मुख्य भाव को अक्षुण्ण रखते हुए छोटे रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

आज के युग में जब समय का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है, संक्षिप्त और प्रभावी अभिव्यक्ति का महत्व भी बढ़ गया है।

पत्रकारिता, रिपोर्ट लेखन, प्रशासनिक कार्य, और शैक्षणिक क्षेत्र — सभी में संक्षिप्तीकरण एक आवश्यक कौशल बन गया है।

संक्षिप्तीकरण केवल शब्दों की कटौती नहीं, बल्कि विचारों की स्पष्टता और सारग्रहण की क्षमता है। यह बताता है कि लेखक किसी विषय को कितनी गहराई से समझकर उसका सार निकाल सकता है।

13.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी निम्नलिखित बिंदुओं को समझ सकेंगे —

1. संक्षिप्तीकरण का अर्थ और इसकी आवश्यकता को स्पष्ट करना।
2. संक्षिप्तीकरण के विभिन्न प्रकारों का अध्ययन करना।
3. संक्षिप्तीकरण की प्रक्रिया और उसके प्रमुख नियमों को समझना।
4. प्रभावी संक्षिप्त लेखन के लिए आवश्यक कौशलों का विकास करना।
5. व्यावहारिक जीवन में संक्षिप्तीकरण के प्रयोग को पहचानना।

13.3 संक्षिप्तीकरण का अर्थ एवं परिभाषा

'संक्षिप्त' शब्द का अर्थ होता है — संक्षेप में कहा गया, परंतु सम्पूर्ण भाव लिए हुए।

इस प्रकार संक्षिप्तीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से किसी लेख, भाषण या अनुच्छेद के मूल विचार को कम शब्दों में, परंतु सम्पूर्णता के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

परिभाषाएँ :

डॉ. श्यामसुंदर दास के अनुसार —

"संक्षिप्तीकरण वह कला है जिसमें विस्तृत विचार को उसके मूल सार तक सीमित कर दिया जाता है।"

डॉ. रामचंद्र तिवारी के अनुसार —

"संक्षिप्तीकरण विचार-संयम की परीक्षा है — जहाँ शब्दों का नहीं, विचारों का सार प्रस्तुत होता है।"

मुख्य बात यह है कि संक्षिप्त लेखन में न तो मूल विचार खोए और न ही लेख की आत्मा।

13.4 संक्षिप्तीकरण के प्रकार

संक्षिप्तीकरण के कई प्रकार होते हैं, जो उद्देश्य और विषय के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं —

(1) विषय-आधारित संक्षिप्तीकरण

यह किसी लेख या अनुच्छेद के मुख्य विचार पर केंद्रित होता है। इसका उद्देश्य विषय का सार प्रस्तुत करना होता है।

(2) रूप-आधारित संक्षिप्तीकरण

यह किसी भाषण, संवाद, समाचार या रिपोर्ट को संक्षिप्त करने पर आधारित होता है।

(3) आलेख या पुस्तक-सार संक्षिप्तीकरण

किसी बड़े आलेख, निबंध या पुस्तक का सारांश तैयार करना — ताकि उसके मुख्य विचारों को एक नजर में समझा जा सके।

(4) प्रशासनिक या कार्यात्मक संक्षिप्तीकरण

रिपोर्ट, आवेदन, या फाइलों के संक्षिप्त नोट्स तैयार करने के लिए किया जाता है। यह सरकारी और व्यावसायिक कार्य में अत्यंत उपयोगी है।

13.5 संक्षिप्तीकरण के नियम और विधियाँ

संक्षिप्तीकरण करते समय कुछ मूलभूत नियमों का पालन आवश्यक होता है —

1. पाठ का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें :
   पूरा लेख या अनुच्छेद कम-से-कम दो बार पढ़ें ताकि उसका भाव स्पष्ट रूप से समझ सकें।

2. मुख्य विचार की पहचान करें :
   कौन-सा भाग आवश्यक है और कौन-सा गौण — यह तय करें।

3. अनावश्यक शब्द, उदाहरण, और अलंकार हटा दें :
   संक्षिप्तीकरण का उद्देश्य भाव को रखना है, शब्दों की भीड़ नहीं।

4. स्वयं के शब्दों में लिखें :
   संक्षिप्तीकरण करते समय मूल लेखक के शब्दों को ज्यों का त्यों न दोहराएँ, बल्कि अपने शब्दों में लिखें।

5 लंबाई का ध्यान रखें :

सामान्यतः संक्षेप मूल लेख के एक-तिहाई या एक-चौथाई भाग के बराबर होता है।

6 भाषा और शैली :

भाषा सरल, स्पष्ट और सुसंगठित होनी चाहिए। वाक्य छोटे और अर्थपूर्ण हों।

7 शीर्षक दें :

संक्षेप के अंत में एक उपयुक्त शीर्षक दें जो सार को व्यक्त करे।

13.6 संक्षिप्तीकरण के लाभ एवं सीमाएँ

लाभ :

विचारों की स्पष्टता आती है।

लेखन में सटीकता और अनुशासन का विकास होता है।

स्मरणशक्ति और विश्लेषण-क्षमता में वृद्धि होती है।

परीक्षा और व्यावसायिक जीवन में उपयोगी होता है।

संवाद को संक्षिप्त और प्रभावी बनाता है।

सीमाएँ :

कभी-कभी भाव-संपूर्णता खो सकती है।

भावनात्मक या काव्यात्मक लेखों में संक्षिप्तीकरण कठिन होता है।

अत्यधिक संक्षिप्तीकरण से अर्थ विकृत हो सकता है।

प्रगति जांचें:

प्रश्न 1: "संछिप्तिकारन क्या है?

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 2: किसी भी गद्यांश का सारांश कैसे किखा जाता है?

.....

.....

.....

.....

13.7 सारांश

संक्षिप्तीकरण लेखन का वह रूप है जो विचारों की गहराई और शब्दों की संयमिता दोनों की परीक्षा लेता है।

यह न केवल भाषा का अभ्यास है, बल्कि विचारशीलता और तार्किकता का प्रशिक्षण भी है।

आज के युग में जहाँ सूचना और लेखन का प्रवाह अत्यधिक है, वहाँ संक्षिप्तीकरण की कला व्यक्ति को सही जानकारी चुनने और उसे सारगर्भित रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता प्रदान करती है।

13.8 अभ्यास

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ):

1 संक्षिप्तीकरण का मुख्य उद्देश्य क्या है?

(a) लेख को लंबा बनाना

(b) शब्दों को सजाना

(c) भाव का सार प्रस्तुत करना

(d) कठिन भाषा प्रयोग करना

उत्तर: (c)

2 संक्षिप्तीकरण का उचित अनुपात क्या माना जाता है?

(a) आधा लेख

(b) एक-तिहाई या एक-चौथाई

(c) मूल लेख के बराबर

(d) दसवाँ भाग

उत्तर: (b)

3 संक्षिप्तीकरण करते समय सबसे पहले क्या करना चाहिए?

(a) वाक्य रचना बदलना

(b) लेख को ध्यान से पढ़ना

(c) शीर्षक देना

(d) अनुच्छेद जोड़ना

उत्तर: (b)

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न:

1 संक्षिप्तीकरण की परिभाषा दीजिए।

2 संक्षिप्तीकरण की दो प्रमुख विधियाँ लिखिए।

3 संक्षिप्तीकरण करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:

1 संक्षिप्तीकरण की प्रक्रिया और नियमों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

2 संक्षिप्तीकरण के प्रकारों का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

3 संक्षिप्तीकरण के लाभ और सीमाओं पर विचार प्रस्तुत कीजिए।

13.9 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

1 तिवारी, रामचंद्र. हिंदी लेखन कौशल. नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान, 2020।

2 शर्मा, ओमप्रकाश. प्रभावी लेखन और संप्रेषण कला. जयपुर: यूनिवर्सल बुक हाउस, 2021।

3 Mathur, Jagdish Chandra. Hindi Communication and Writing. Delhi: Rajkamal Prakashan, 2019।

4 Dwivedi, S. K. Effective Writing Skills in Hindi. Lucknow: Academic Press, 2022।

हिंदी भाषा

खंड-5

इकाई 14 : मानक भाषा

संरचना

14.1 परिचय

14.2 उद्देश्य

14.3 मानक भाषा की परिभाषा और स्वरूप

14.4 मानक भाषा की विशेषताएँ

14.5 मानक भाषा और बोलियाँ

14.6 हिंदी की मानक रूप-रेखा

14.7 मानक भाषा के विकास में माध्यमों की भूमिका

14.8 सारांश

14.9 अभ्यास

14.10 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

14.1 परिचय

भाषा मनुष्य की सामाजिक पहचान का मूल तत्व है। जब किसी भाषा का प्रयोग समाज में व्यापक रूप से शिक्षण, प्रशासन, साहित्य, और संप्रेषण के स्तर पर किया जाता है, तो उसकी एक निश्चित और सर्वमान्य रूपरेखा विकसित होती है, जिसे मानक भाषा कहा जाता है। यह रूप विविध बोलियों और क्षेत्रीय रूपों से ऊपर उठकर एक ऐसे स्वरूप को प्रस्तुत करता है, जो स्पष्ट, सुसंगत और सर्वस्वीकार्य हो।

हिंदी भाषा का मानक रूप आज के समय में भारतीय समाज की एकता और संप्रेषण का प्रमुख साधन बन चुका है। यह केवल भाषाई रूप नहीं, बल्कि सांस्कृतिक समन्वय का भी प्रतीक है।

14.2 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य विद्यार्थियों को निम्नलिखित बातों से परिचित कराना है—

मानक भाषा की परिभाषा और उसके स्वरूप को समझना।

हिंदी की मानक भाषा के विकास की प्रक्रिया को जानना।

मानक भाषा और बोलियों के संबंध को समझना।

भाषा-मानकीकरण में माध्यमों, शिक्षा और साहित्य की भूमिका को पहचानना।

व्यावहारिक दृष्टि से सही और शुद्ध भाषा प्रयोग का अभ्यास करना।

14.3 मानक भाषा की परिभाषा और स्वरूप

मानक भाषा वह रूप है जिसे समाज के एक बड़े वर्ग द्वारा मान्यता प्राप्त हो और जिसका प्रयोग प्रशासन, शिक्षा, साहित्य तथा संचार के औपचारिक क्षेत्रों में किया जाए।

भाषाविदों के अनुसार, मानक भाषा किसी एक व्यक्ति या क्षेत्र की नहीं होती, बल्कि यह समाज के सामूहिक उपयोग, शिक्षा और लेखन पर आधारित एक साझा रूप होती है।

उदाहरण के लिए, हिंदी की मानक भाषा खड़ीबोली पर आधारित है, जिसमें ब्रज, अवधी, भोजपुरी, और अन्य बोलियों की विशेषताओं का समावेश हुआ है। मानक भाषा में वर्तनी, उच्चारण, शब्दावली और व्याकरण के निश्चित नियम होते हैं, जिससे संप्रेषण में एकरूपता बनी रहती है।

14.4 मानक भाषा की विशेषताएँ

मानक भाषा की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

सर्वस्वीकार्यता: समाज के अधिकांश शिक्षित वर्ग द्वारा इसका उपयोग और स्वीकार किया जाना।

नियमबद्धता: व्याकरण और वर्तनी के निश्चित नियमों का पालन।

स्थायित्व: समय के साथ इसका स्थिर रहना, यद्यपि यह परिवर्तित परिस्थितियों में अनुकूलन कर लेती है।

स्पष्टता: विचारों की सटीक और स्पष्ट अभिव्यक्ति में सक्षम होना।

साहित्यिकता: इसमें उच्च कोटि की साहित्यिक अभिव्यक्ति संभव होती है।

व्यावहारिकता: यह प्रशासन, शिक्षा और तकनीकी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त होती है।

इस प्रकार, मानक भाषा न केवल संप्रेषण का साधन है, बल्कि यह समाज की सांस्कृतिक एकता की पहचान भी है।

14.5 मानक भाषा और बोलियाँ

किसी भी भाषा का आधार उसकी बोलियाँ होती हैं। बोलियाँ किसी क्षेत्र विशेष की ध्वन्यात्मक, शब्दावली और व्याकरणिक भिन्नताओं का प्रतिनिधित्व करती हैं।

मानक भाषा इन बोलियों में से एक पर आधारित होकर विकसित होती है। जैसे हिंदी की मानक भाषा खड़ीबोली पर आधारित है, परंतु इसमें ब्रजभाषा, अवधी और मैथिली जैसी बोलियों का योगदान भी रहा है।

बोलियाँ और मानक भाषा एक-दूसरे की विरोधी नहीं हैं। बल्कि मानक भाषा, बोलियों की संपन्नता से अपना भंडार भरती रहती है। बोलियाँ साहित्य, लोकगीत, और सांस्कृतिक जीवन में जीवंतता बनाए रखती हैं, जबकि मानक भाषा प्रशासनिक और औपचारिक संप्रेषण का माध्यम बनती है।

14.6 हिंदी की मानक रूप-रेखा

हिंदी की मानक रूप-रेखा का निर्माण 19वीं शताब्दी में आरंभ हुआ जब शिक्षा और प्रशासन के क्षेत्र में एक समान भाषा की आवश्यकता महसूस हुई।

भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, और आचार्य रामचंद्र शुक्ल जैसे साहित्यकारों ने हिंदी के मानक स्वरूप को स्थापित करने में प्रमुख भूमिका निभाई। उन्होंने व्याकरण, वर्तनी और शब्दावली को स्थिर करने का प्रयास किया।

आधुनिक युग में माध्यमिक और उच्च शिक्षा, समाचार माध्यम, तथा सरकारी नीतियों ने हिंदी के मानकीकरण को और सुदृढ़ किया। आज देवनागरी लिपि में लिखी गई खड़ीबोली हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है।

14.7 मानक भाषा के विकास में माध्यमों की भूमिका

माध्यमों का भाषा के मानकीकरण में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है।

शिक्षा माध्यम: विद्यालय और विश्वविद्यालय भाषा की शुद्धता और मानक प्रयोग को प्रोत्साहित करते हैं।

मुद्रित माध्यम: समाचारपत्र, पत्रिकाएँ और पुस्तकें एक समान भाषा रूप के प्रसार में सहायक हैं।

दृश्य–श्रव्य माध्यम: रेडियो, टेलीविजन, और इंटरनेट ने मानक भाषा को जन–जन तक पहुँचाया है।

प्रशासनिक माध्यम: सरकारी आदेश, अधिसूचनाएँ, और नीतियाँ भाषा को औपचारिक स्वरूप प्रदान करती हैं।

इस प्रकार, माध्यमों के माध्यम से भाषा का एक सुसंगत और मानक रूप समाज में प्रतिष्ठित होता है।

प्रगति जांचें:

प्रश्न 1: "स्वतंत्रता पुकारती" शीर्षक से आप क्या समझते हैं? इस विषय का आधुनिक भारत के युवाओं से क्या संबंध है?

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 2:स्वतंत्रता केवल राजनीतिक मुक्ति नहीं, बल्कि नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी भी है — इस कथन की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

14.8 सारांश

मानक भाषा किसी भी समाज की भाषाई एकता और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक होती है। यह नियमबद्ध, सर्वस्वीकार्य और स्पष्ट होती है। हिंदी की मानक भाषा खड़ीबोली पर आधारित है, जिसने विविध बोलियों की समृद्ध परंपरा को आत्मसात किया है।

शिक्षा, साहित्य और माध्यमों ने हिंदी को एक सशक्त मानक रूप में विकसित किया है, जो आज भारत की सांस्कृतिक एकता और प्रशासनिक संवाद का प्रमुख माध्यम है।

14.9 अभ्यास

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs):

मानक भाषा का मुख्य आधार क्या होता है?

(क) क्षेत्रीयता (ख) सर्वस्वीकार्यता (ग) लोकप्रचलन (घ) ऐतिहासिकता

हिंदी की मानक भाषा किस बोली पर आधारित है?

(क) ब्रजभाषा (ख) अवधी (ग) खड़ीबोली (घ) भोजपुरी

भाषा के मानकीकरण में कौन-सा माध्यम सबसे अधिक प्रभावी रहा है?

(क) लोकगीत (ख) शिक्षा (ग) पत्रिका (घ) विज्ञान

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न:

मानक भाषा से आप क्या समझते हैं?

हिंदी की मानक भाषा के विकास में किन विद्वानों का योगदान रहा है?

बोलियों और मानक भाषा के संबंध को स्पष्ट करें।

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:

मानक भाषा की विशेषताओं का विस्तारपूर्वक विवेचन कीजिए।

हिंदी के मानक रूप के निर्माण की प्रक्रिया को समझाइए।

भाषा के मानकीकरण में आधुनिक माध्यमों की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

14.10 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

मिश्र, कुंवरनाथ (2010). भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा का स्वरूप. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन।

तिवारी, नागेन्द्र (2012). हिंदी की मानक भाषा. वाराणसी: भारती भवन।

शुक्ल, रामचंद्र (2008). हिंदी साहित्य का इतिहास. इलाहाबाद: लोकभारती।

सिंह, उदय नारायण (2015). भाषा और समाज. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ।

त्रिपाठी, विश्वनाथ (2019). भाषा का समाजशास्त्र. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

हिंदी भाषा

इकाई 15 : पर्यायवाची शब्द

संरचना

15.1 परिचय

15.2 उद्देश्य

15.3 पर्यायवाची शब्द की परिभाषा और महत्व

15.4 पर्यायवाची शब्दों के प्रकार

15.5 हिंदी में पर्यायवाची शब्दों के स्रोत

15.6 पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग और सटीकता

15.7 साहित्य में पर्यायवाची शब्दों की भूमिका

15.8 सारांश

15.9 अभ्यास

15.10 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

15.1 परिचय

भाषा अभिव्यक्ति का सबसे प्रभावी माध्यम है और शब्द भाषा की आत्मा हैं। प्रत्येक भाव या विचार को सटीक रूप से व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्दों की आवश्यकता होती है। किंतु कभी-कभी एक ही अर्थ को व्यक्त करने के लिए एक से अधिक शब्द होते हैं, जिन्हें पर्यायवाची शब्द कहा जाता है।

पर्यायवाची शब्द भाषा को सौंदर्य, विविधता और लचक प्रदान करते हैं। हिंदी भाषा की समृद्धि इस बात में निहित है कि इसमें एक ही अर्थ को व्यक्त करने के लिए अनेक शब्द उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिए— "जल", "पानी", "नीर", "तोय", "वारि" आदि सभी शब्द समानार्थक हैं।

पर्यायवाची शब्द भाषा की अभिव्यक्ति को अधिक प्रभावशाली, भावपूर्ण और साहित्यिक बनाते हैं।

15.2 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य विद्यार्थियों को निम्नलिखित बिंदुओं से अवगत कराना है—

पर्यायवाची शब्द की परिभाषा और उसके भाषिक महत्व को समझना।

पर्यायवाची शब्दों के विभिन्न प्रकारों का अध्ययन करना।

हिंदी में पर्यायवाची शब्दों के प्रमुख स्रोतों को पहचानना।

भाषा और साहित्य में पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग की सटीकता को समझना।

लेखन और वाचन में शब्द–चयन की सुसंवेदनशीलता विकसित करना।

15.3 पर्यायवाची शब्द की परिभाषा और महत्व

पर्यायवाची शब्द वे शब्द हैं जिनका अर्थ समान या लगभग समान होता है, परंतु उनके प्रयोग और भाव में थोड़ा अंतर होता है।

संस्कृत शब्द "पर्याय" का अर्थ है स्थानापन्न या विकल्प, और "वाची" का अर्थ है बोलने वाला। अर्थात् पर्यायवाची शब्द वे हैं जो किसी एक वस्तु, भाव या क्रिया के लिए एक-दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त हो सकते हैं।

उदाहरणस्वरूप—

सूर्य के पर्यायवाची हैं: आदित्य, भास्कर, दिनकर, दिवाकर, रवि।

जल के पर्यायवाची हैं: नीर, वारि, तोय, पय, सलिल।

पृथ्वी के पर्यायवाची हैं: भूमि, धरती, वसुंधरा, क्षिति, मेदिनी।

महत्व:

पर्यायवाची शब्द भाषा को लयात्मकता, सजीवता और सौंदर्य प्रदान करते हैं। ये साहित्यिक रचनाओं में भावविस्तार के साथ-साथ शब्दों की पुनरावृत्ति से बचने में भी सहायक होते हैं। एक लेखक या कवि अपनी भावनाओं की गहराई व्यक्त करने के लिए पर्यायवाची शब्दों का सटीक प्रयोग करता है।

15.4 पर्यायवाची शब्दों के प्रकार

पर्यायवाची शब्दों को उनके अर्थ, उत्पत्ति और प्रयोग के आधार पर निम्न प्रकारों में बाँटा जा सकता है—

पूर्ण पर्यायवाची:

जिन शब्दों का अर्थ पूर्णतः समान हो और जिन्हें किसी भी संदर्भ में परस्पर बदला जा सके।

जैसे — जल = पानी, बालक = लड़का।

अपूर्ण या भावभेद पर्यायवाची:

जिनका अर्थ समान होते हुए भी भाव या प्रयोजन में थोड़ा अंतर हो।

जैसे — मृत्यु, देहांत, स्वर्गवास, परलोकगमन।

सांस्कृतिक पर्यायवाची:

जिनमें अर्थ समान होते हुए भी सांस्कृतिक या धार्मिक ध्वनि भिन्न होती है।

जैसे — गाय, धेनु, सुरभि, कामधेनु।

कालगत पर्यायवाची:

समय के साथ बदलने वाले पर्याय। जैसे— "पत्र" का एक अर्थ है कागज़ का टुकड़ा, दूसरा पत्राचार।

इन प्रकारों के माध्यम से भाषा अधिक लचीली और अभिव्यक्तिपूर्ण बनती है।

15.5 हिंदी में पर्यायवाची शब्दों के स्रोत

हिंदी में पर्यायवाची शब्दों के अनेक स्रोत हैं, जिनसे इसकी शब्दसंपदा समृद्ध हुई है—

संस्कृत:

हिंदी के अधिकांश पर्यायवाची संस्कृत से आए हैं, जैसे सूर्य – आदित्य, नारी – स्त्री, मनुष्य – पुरुष।

प्राकृत और अपभ्रंश:

इन भाषाओं से भी अनेक पर्यायवाची शब्द हिंदी में आए, जैसे "लोक" और "लोग"।

फारसी और अरबी:

मुग़ल शासनकाल के दौरान कई विदेशी शब्द पर्यायवाची रूप में हिंदी में समाहित हुए। जैसे— "दिल" (हृदय), "ज़बान" (भाषा)।

देशज स्रोत:

लोकभाषाओं और बोलियों से भी हिंदी ने कई पर्याय ग्रहण किए हैं, जैसे "कपड़ा", "वस्त्र", "पोशाक"।

इस प्रकार, हिंदी की पर्यायवाची शब्दावली विभिन्न भाषाई स्रोतों की देन है, जो इसे बहुभाषी संस्कृति का दर्पण बनाती है।

15.6 पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग और सटीकता

पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग में सावधानी आवश्यक है। सभी शब्दों का अर्थ भले ही समान लगे, किंतु उनके संदर्भ, भावार्थ और सांस्कृतिक अर्थ में भिन्नता होती है।

उदाहरण के लिए—

"हृदय" और "दिल" दोनों का अर्थ समान है, पर "हृदय" का प्रयोग अधिक औपचारिक और साहित्यिक प्रसंग में किया जाता है, जबकि "दिल" बोलचाल में सहज प्रतीत होता है।

"गमन" और "जाना" दोनों समानार्थक हैं, किंतु "गमन" का प्रयोग अधिक संस्कृतनिष्ठ है।

इसलिए पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग करते समय संदर्भ, लहजा और उद्देश्य के अनुरूप शब्द चुनना अत्यंत आवश्यक है।

15.7 साहित्य में पर्यायवाची शब्दों की भूमिका

साहित्य में पर्यायवाची शब्द केवल भाषिक अलंकरण नहीं हैं, बल्कि वे भावनाओं की गहराई और सौंदर्य का माध्यम भी हैं।

काव्य में: कवि अपनी भावनाओं की तीव्रता और लयात्मकता के लिए विभिन्न पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग करता है।

जैसे — "सूर्य" के लिए "भास्कर", "दिवाकर", "रवि" शब्द कविता को संगीतात्मक बनाते हैं।

गद्य में: लेखक समान अर्थ वाले शब्दों के माध्यम से भाषा में प्रवाह और विविधता लाता है।

निबंधों और भाषणों में पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग पुनरावृत्ति से बचाता है और भाषा को प्रभावशाली बनाता है।

इस प्रकार, साहित्य में पर्यायवाची शब्द अभिव्यक्ति की शक्ति को बढ़ाते हैं।

प्रगति जांचें:

प्रश्न 1: "पर्यववाची क्या है??

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 2: शब्दों का प्रयोग कैसे किया जाता है ?

.....

.....

.....

.....

15.8 सारांश

पर्यायवाची शब्द भाषा की विविधता और संपन्नता का प्रतीक हैं। ये एक ही अर्थ के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करते हैं, जिससे भाषा सजीव और अर्थपूर्ण बनती है।

हिंदी में पर्यायवाची शब्द संस्कृत, अरबी, फारसी, प्राकृत और लोकभाषाओं से आए हैं। इनका प्रयोग भाषा की सटीकता, शुद्धता और सौंदर्य को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

साहित्य में पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग से रचना अधिक भावनात्मक और प्रभावशाली बन जाती है।

15.9 अभ्यास

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs):

"पर्यायवाची" शब्द का अर्थ क्या है?

(क) समान अर्थ वाले शब्द (ख) विपरीत अर्थ वाले (ग) ध्वन्यात्मक शब्द (घ) संज्ञा शब्द

हिंदी का अधिकांश पर्यायवाची शब्द किस भाषा से आया है?

(क) उर्दू (ख) संस्कृत (ग) अंग्रेज़ी (घ) मराठी

"दिल" और "हृदय" में क्या अंतर है?

(क) भावार्थ (ख) व्याकरण (ग) रूप (घ) उच्चारण

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न:

पर्यायवाची शब्द की परिभाषा दीजिए।

पर्यायवाची शब्दों के दो उदाहरण लिखिए।

हिंदी में पर्यायवाची शब्दों के स्रोत क्या हैं?

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:

पर्यायवाची शब्दों के प्रकारों का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग में सटीकता क्यों आवश्यक है?

साहित्य में पर्यायवाची शब्दों की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

15.10 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

द्विवेदी, हजारीप्रसाद (2005). भाषा और साहित्य. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

मिश्र, कुंवरनाथ (2010). हिंदी शब्द और उनका व्याकरण. वाराणसी: भारती भवन।

शुक्ल, रामचंद्र (2008). हिंदी साहित्य का इतिहास. इलाहाबाद: लोकभारती।

सिंह, उदय नारायण (2014). भाषा विज्ञान और शब्द–विज्ञान. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ।

त्रिपाठी, विश्वनाथ (2020). हिंदी शब्द संसार. दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास।

इकाई 16 : पत्र लेखन

संरचना (Structure)

16.1 परिचय

16.2 उद्देश्य

16.3 पत्र लेखन का अर्थ और आवश्यकता

16.4 पत्रों के प्रकार

16.5 औपचारिक (Formal) एवं अनौपचारिक (Informal) पत्र लेखन

16.6 पत्र लेखन की भाषा, शैली और विन्यास

16.7 आधुनिक युग में पत्र लेखन का रूपांतरण

16.8 सारांश

16.9 अभ्यास

16.10 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

16.1 परिचय

पत्र लेखन मानव संचार का एक प्राचीन और प्रभावशाली माध्यम रहा है। पत्र केवल सूचना देने का साधन नहीं, बल्कि भावनाओं, विचारों और सामाजिक संबंधों का भी सेतु है। प्राचीन काल में जब दूरसंचार के आधुनिक साधन उपलब्ध नहीं थे, तब पत्र ही व्यक्ति से व्यक्ति, नगर से नगर और देश से देश के बीच संचार का प्रमुख माध्यम था।

भारत की सांस्कृतिक परंपरा में पत्र लेखन का विशेष स्थान रहा है। तुलसीदास, महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे महान व्यक्तियों के पत्र आज भी साहित्य और इतिहास का अमूल्य हिस्सा माने जाते हैं। पत्रों में लेखक का व्यक्तित्व, भावनाएँ और संवेदनाएँ झलकती हैं, इसीलिए पत्रों को "मन की वाणी" कहा गया है।

16.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी निम्नलिखित बिंदुओं को समझने में सक्षम होंगे—

पत्र लेखन की परिभाषा, उद्देश्य एवं आवश्यकता को स्पष्ट कर सकेंगे।

पत्रों के प्रकारों का वर्गीकरण कर सकेंगे।

औपचारिक और अनौपचारिक पत्रों की संरचना एवं भाषा शैली को समझ सकेंगे।

अच्छे पत्र लेखन के गुणों को पहचान सकेंगे।

आधुनिक संचार माध्यमों के प्रभाव से पत्र लेखन के रूपांतरण को समझ सकेंगे।

16.3 पत्र लेखन का अर्थ और आवश्यकता

पत्र लेखन का अर्थ है— किसी व्यक्ति या संस्था को किसी विषय विशेष पर अपने विचार, भावनाएँ, सूचना या अनुरोध को लिखित रूप में प्रेषित करना। पत्र लिखने का उद्देश्य केवल संदेश देना नहीं होता, बल्कि यह एक संवाद का माध्यम होता है जो हृदय से हृदय तक पहुँचता है।

पत्र लेखन की आवश्यकता मानव जीवन में सदैव बनी रही है।

यह सामाजिक, पारिवारिक और प्रशासनिक संबंधों को मजबूत करता है।

विचारों की अभिव्यक्ति को सुस्पष्ट करता है।

औपचारिक और व्यावसायिक कार्यों में यह प्रमाण का भी कार्य करता है।

साहित्यिक दृष्टि से पत्र लेखन व्यक्ति की भाषा-शैली, भावनात्मकता और संस्कार को उजागर करता है।

इस प्रकार, पत्र लेखन केवल एक संचार विधा नहीं बल्कि अभिव्यक्ति की कला भी है।

16.4 पत्रों के प्रकार

पत्रों को उनके स्वरूप, उद्देश्य और संबोधन के आधार पर मुख्यतः दो वर्गों में बाँटा जा सकता है—

(क) अनौपचारिक पत्र (Informal Letters):

ये पत्र व्यक्तिगत संबंधों में लिखे जाते हैं। इनमें आत्मीयता, भावुकता और स्नेह की प्रधानता होती है।

उदाहरण:

मित्र या परिजन को पत्र

धन्यवाद, शुभकामना या संवेदना पत्र

आमंत्रण पत्र

विद्यार्थी का अपने माता-पिता को पत्र

उदाहरण:

प्रिय मित्र सुरेश,

तुम्हारे पत्र से यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ कि तुमने परीक्षा में उत्कृष्ट अंक प्राप्त किए हैं। तुम्हारी सफलता पूरे परिवार के लिए गर्व की बात है। मैं तुम्हें हार्दिक बधाई देता हूँ।

स्नेह सहित,

तुम्हारा मित्र – अमित।

(ख) औपचारिक पत्र (Formal Letters):

इनका उपयोग प्रशासनिक, व्यावसायिक, शैक्षणिक या सरकारी कार्यों के लिए किया जाता है। इनमें भाषा औपचारिक, विनम्र और सुसंगत होती है।

उदाहरण:

नौकरी के लिए आवेदन पत्र

शिकायत पत्र

विद्यालय या कार्यालय को आवेदन पत्र

संपादक को पत्र

उदाहरण:

प्रति,

प्रधानाचार्य महोदय,

राजकीय इंटर कॉलेज, लखनऊ।

विषय: वार्षिक परीक्षा में पुनर्मूल्यांकन हेतु आवेदन।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैंने इस वर्ष बारहवीं कक्षा की परीक्षा दी थी। मेरा परिणाम संतोषजनक नहीं रहा। कृपया मेरे उत्तरपुस्तिका का पुनर्मूल्यांकन कराने की अनुमति प्रदान करें।

कृतज्ञ रहूँगा।

सादर,

आपका आज्ञाकारी छात्र,

राकेश कुमार, कक्षा–12

16.5 औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र लेखन की भाषा, शैली और विन्यास

पत्र लेखन में भाषा का चयन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

अनौपचारिक पत्रों में भाषा भावनात्मक, सरल, और अपनत्व भरी होती है।

औपचारिक पत्रों में भाषा मर्यादित, विनम्र, स्पष्ट और तार्किक होती है।

विन्यास (Format):

पता (Address) — ऊपर दाएँ कोने पर लेखक का पता।

तिथि (Date) — पते के नीचे।

संवोधन (Salutation) — जैसे प्रिय मित्र, आदरणीय सर आदि।

मुख्य भाग (Body) — विषय का विवरण, भावनाओं की अभिव्यक्ति या निवेदन।

समापन (Closing) — आपका स्नेही, आपका आज्ञाकारी, आदि।

हस्ताक्षर (Signature) — लेखक का नाम।

पत्र लेखन में वाक्य छोटे, स्पष्ट और भावपूर्ण होने चाहिए। व्याकरण की शुद्धता और उपयुक्त विरामचिह्नों का प्रयोग पत्र को प्रभावशाली बनाते हैं।

16.6 आधुनिक युग में पत्र लेखन का रूपांतरण

आज के डिजिटल युग में पारंपरिक पत्र लेखन का स्थान धीरे-धीरे ईमेल, एसएमएस, व्हाट्सऐप और अन्य सोशल मीडिया संदेशों ने ले लिया है। फिर भी पत्र लेखन की अपनी विशिष्टता और गरिमा बनी हुई है।

आधुनिक युग की विशेषताएँ:

ईमेल पत्राचार का तेज़ और प्रभावी माध्यम बन चुका है।

ऑनलाइन आवेदन पत्रों ने प्रशासनिक कार्यों को सरल बनाया है।

भावनात्मक दृष्टि से हस्तलिखित पत्र का आकर्षण अब भी बना हुआ है।

पत्र लेखन अब केवल संचार का साधन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक बन गया है।

16.7 पत्र लेखन के गुण

एक अच्छा पत्र वह है जो—

संक्षिप्त और स्पष्ट हो।

विषय से संबंधित हो।

शिष्ट और विनम्र भाषा में लिखा गया हो।

सही प्रारूप और क्रम का पालन करे।

भावनाओं की सच्ची अभिव्यक्ति करे।

पत्र लेखन के इन गुणों का अभ्यास विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति की सटीकता और सामाजिक संवेदनशीलता को विकसित करता है।

प्रगति जांचें:

प्रश्न 1: "पत्र लिखने की विधि बताओ ।

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 2: पत्र कितने प्रकार के होते है?

.....

.....

.....

.....

16.8 सारांश

पत्र लेखन भाषा की अभिव्यक्ति की एक महत्वपूर्ण कला है जो व्यक्ति को संवादशील और विचारशील बनाती है। यह व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर संबंधों को दृढ़ करता है।

पत्र लेखन केवल भाषा अभ्यास नहीं, बल्कि भावनात्मक और सांस्कृतिक अनुभव का माध्यम भी है। आधुनिक युग में भले ही डिजिटल संचार ने इसका स्थान लिया हो, परंतु पत्र का महत्व आज भी अक्षुण्ण है।

16.9 अभ्यास

(क) बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs):

पत्र लेखन का मुख्य उद्देश्य क्या है?

(क) सूचना देना (ख) संवाद स्थापित करना (ग) लेखन अभ्यास (घ) मनोरंजन

उत्तर: (ख)

औपचारिक पत्रों की भाषा कैसी होती है?

(क) भावुक (ख) बोलचाल की (ग) मर्यादित और विनम्र (घ) काव्यात्मक

उत्तर: (ग)

अनौपचारिक पत्र में कौन-सा तत्व प्रमुख होता है?

(क) नियम (ख) आत्मीयता (ग) औपचारिकता (घ) प्रशासनिक भाषा

उत्तर: (ख)

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न:

पत्र लेखन की आवश्यकता क्या है?

औपचारिक और अनौपचारिक पत्र में क्या अंतर है?

पत्र लेखन के पाँच प्रमुख गुण लिखिए।

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:

पत्र लेखन की भाषा और शैली का वर्णन कीजिए।

आधुनिक युग में पत्र लेखन के रूपांतरण पर चर्चा कीजिए।

औपचारिक पत्र के प्रारूप को उदाहरण सहित समझाइए।

16.10 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

मिश्र, रामदेव (2015). पत्र लेखन की कला. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।

तिवारी, शारदा (2018). प्रभावी संप्रेषण और पत्र लेखन. वाराणसी: भारती भवन।

Mathur, Jagdish Chandra (2020). Hindi Communication and Expression. Delhi: NCERT.

जोशी, वीरेन्द्र कुमार (2021). व्यावहारिक हिंदी. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।

Dwivedi, Harishankar (2022). भाषा और अभिव्यक्ति. नई दिल्ली: प्रकाशन भवन।

हिंदी भाषा

इकाई 17 : अपठित गद्यांश संरचना

17.1 परिचय

17.2 उद्देश्य

17.3 गद्य की परिभाषा एवं स्वरूप

17.4 पठित गद्यांश की व्याख्या की विधि

17.5 गद्यांश के प्रमुख तत्व : भाषा, भाव, शैली, संदेश

17.6 गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देने की तकनीक

17.7 सारांश

17.8 अभ्यास

17.9 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

17.1 परिचय

गद्य साहित्य का वह रूप है जिसमें लेखक अपने विचारों, अनुभवों और भावनाओं को सरल, स्पष्ट और यथार्थ रूप में अभिव्यक्त करता है। गद्यांश का अध्ययन विद्यार्थियों में भाषा की समझ, विचार-विस्तार तथा विश्लेषणात्मक क्षमता को विकसित करता है।

पठित गद्यांश किसी प्रसिद्ध लेखक के लेख, निबंध, कहानी, संस्मरण अथवा भाषण का अंश हो सकता है। इसका उद्देश्य केवल पठन नहीं, बल्कि गहराई से अर्थ ग्रहण करना, भावान्विति समझना और भाषा की संरचना को पहचानना भी होता है।

17.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी—

गद्य एवं गद्यांश के स्वरूप को पहचान सकेंगे।

गद्यांश की व्याख्या की उपयुक्त विधियों को समझ सकेंगे।

गद्यांश में निहित भाव, विचार और लेखक की दृष्टि का विश्लेषण कर सकेंगे।

गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखने की विधि सीख सकेंगे।

साहित्यिक गद्य के प्रति संवेदनशीलता और अभिव्यक्ति-कौशल का विकास कर सकेंगे।

17.3 गद्य की परिभाषा एवं स्वरूप

गद्य शब्द संस्कृत धातु "गद्" से बना है जिसका अर्थ होता है — कहना, बोलना।

गद्य वह साहित्यिक रूप है जो पद्य (छंद) से मुक्त होकर सामान्य बोलचाल की भाषा में लिखा जाता है। इसमें लय, छंद या तुकांतता नहीं होती, किंतु विचारों की सघनता और भाषा की सजीवता इसे विशिष्ट बनाती है।

गद्य के प्रमुख रूप हैं — निबंध, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत, संवाद, नाटक, जीवनी आदि।

गद्यांश का चयन प्रायः इनमें से किसी एक रूप से किया जाता है ताकि पाठक को किसी विशिष्ट विचार या भाव से परिचित कराया जा सके।

17.4 पठित गद्यांश की व्याख्या की विधि

गद्यांश की व्याख्या का अर्थ है — उसमें निहित विचारों और भावों का स्पष्ट प्रस्तुतीकरण।

व्याख्या करते समय निम्नलिखित चरण अपनाने चाहिए —

1. पठन – गद्यांश को ध्यानपूर्वक दो या तीन बार पढ़ें।
2. शब्दार्थ – कठिन शब्दों के अर्थ ज्ञात करें।
3. संदर्भ – गद्यांश का लेखक, कृति तथा प्रसंग पहचानें।
4. भावार्थ – गद्यांश का सारांश अपने शब्दों में प्रस्तुत करें।
5. विश्लेषण – लेखक की शैली, भाषा, भाव और उद्देश्य की व्याख्या करें।
6. निष्कर्ष – गद्यांश से प्राप्त संदेश या शिक्षण को संक्षेप में बताएं।

इस प्रक्रिया से विद्यार्थी न केवल गद्यांश को समझता है, बल्कि उसे अपने शब्दों में पुनः प्रस्तुत करने की कला भी सीखता है।

17.5 गद्यांश के प्रमुख तत्व : भाषा, भाव, शैली, संदेश

गद्यांश का मूल्यांकन चार प्रमुख तत्वों पर आधारित होता है —

(क) भाषा – गद्यांश में प्रयुक्त भाषा शुद्ध, सरस और यथार्थ होती है। यह पाठक को लेखक की सोच से जोड़ती है।

(ख) भाव – लेखक के अनुभव, संवेदना और दृष्टिकोण भाव के माध्यम से व्यक्त होते हैं।

(ग) शैली – शैली से लेखक की विशिष्टता प्रकट होती है, जैसे ललित, व्यावहारिक, तर्कप्रधान या हास्यात्मक शैली।

(घ) संदेश – प्रत्येक गद्यांश में कोई न कोई नैतिक, सामाजिक या जीवनमूल्य संबंधित संदेश निहित रहता है, जो पाठक को सोचने पर विवश करता है।

17.6 गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देने की तकनीक

गद्यांश पढ़ने के बाद विद्यार्थियों को अक्सर बहुविकल्पीय, लघु या दीर्घ प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं। इसके लिए—

प्रश्न को ध्यान से पढ़ें और उसका कीवर्ड पहचानें।

उत्तर संक्षिप्त, सटीक और पाठ के अनुरूप लिखें।

यदि प्रश्न 'भावार्थ समझाइए' प्रकार का है, तो अपने शब्दों में उत्तर दें।

लेखक का दृष्टिकोण स्पष्ट करें, मात्र शब्दार्थ न लिखें।

व्याख्या में भाषा सरल, शुद्ध और व्यवस्थित रखें।

इस पद्धति से विद्यार्थियों की परीक्षा में अंक-सुधार के साथ-साथ साहित्यिक समझ भी विकसित होती है।

प्रगति जांचें:

प्रश्न 1: "स्वतंत्रता पुकारती" शीर्षक से आप क्या समझते हैं? इस विषय का आधुनिक भारत के युवाओं से क्या संबंध है?

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 2:स्वतंत्रता केवल राजनीतिक मुक्ति नहीं, बल्कि नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी भी है — इस कथन की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

17.7 सारांश

गद्यांश पाठ-अध्ययन की सबसे महत्त्वपूर्ण विधा है। यह विद्यार्थी को भाषा, साहित्य और विचार-विश्लेषण के गहरे स्तर तक पहुँचने का अवसर देता है। गद्यांश का अध्ययन केवल परीक्षा के दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि अभिव्यक्ति की परिपक्वता और संवेदनशीलता बढ़ाने के लिए भी आवश्यक है।

17.8 अभ्यास

बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ):

1. गद्य का मुख्य लक्षण क्या है?

(क) तुकांतता (ख) छंद (ग) सरल भाषा (घ) उपरोक्त सभी

2. गद्यांश व्याख्या में प्रथम चरण क्या है?

(क) विश्लेषण (ख) पठन (ग) निष्कर्ष (घ) सारांश

3. गद्य शब्द किस धातु से बना है?

(क) गद् (ख) गदित (ग) गद्यांश (घ) गद्यक

लघु उत्तर प्रश्न:

1. गद्य और पद्य में क्या अंतर है?
2. गद्यांश की व्याख्या करते समय किन बिंदुओं का ध्यान रखना चाहिए?
3. गद्यांश में भाषा का क्या महत्त्व है?

दीर्घ उत्तर प्रश्न:

1. पठित गद्यांश की व्याख्या की प्रक्रिया का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।
2. भाषा, भाव और शैली गद्यांश के अर्थ-निर्माण में कैसे सहायक हैं?
3. गद्यांश के अध्ययन से विद्यार्थी में कौन-कौन से गुण विकसित होते हैं?

17.9 संदर्भ एवं अनुशंसित पाठ्य सामग्री

1. मैथिलीशरण गुप्त — हिंदी साहित्य का विकास
2. डॉ. नागेन्द्र — गद्य और उसकी प्रवृत्तियाँ
3. रामविलास शर्मा — हिंदी गद्य का इतिहास
4. हरिवंश राय बच्चन — गद्य की भाषा और साहित्यिक अभिव्यक्ति
5. केंद्रीय हिंदी निदेशालय — हिंदी पठन कौशल मॉड्यूल

हिंदी भाषा

क्रमांक	शब्दकोष
1 संज्ञा	किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु या भावना का नाम बताने वाला शब्द।
2 सर्वनाम	संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला शब्द।
3 विशेषण	संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाला शब्द।
4 मुहावरा	विशेष अर्थ में प्रयुक्त होने वाला स्थिर वाक्यांश।
5 लोकोक्ति	लोक में प्रचलित शिक्षा या अनुभव पर आधारित वाक्य।
6 तत्सम	वे शब्द जो संस्कृत से बिना परिवर्तन के हिन्दी में आए हैं।
7 तद्भव	वे शब्द जो संस्कृत से परिवर्तित रूप में हिन्दी में आए हैं।
8 पर्यायवाची	एक ही अर्थ वाले भिन्न शब्द।
9 उपसर्ग	शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन करने वाला अंश।
10 प्रत्यय	शब्द के बाद जुड़कर उसके अर्थ या रूप में परिवर्तन करने वाला अंश।
11 समास	दो या दो से अधिक शब्दों का मेल, जिससे नया अर्थ निकलता है।
12 विग्रह	संयुक्त शब्द को उसके मूल रूप में विभाजित करना।
13 विराम चिन्ह	लेखन में वाक्य के भावों को स्पष्ट करने वाले चिन्ह।
14 संवाद	दो या अधिक व्यक्तियों के बीच वार्तालाप।
15 पत्र	किसी व्यक्ति को संदेश पहुँचाने का लिखित माध्यम।
16 मानक भाषा	शुद्ध, व्यवस्थित और स्वीकृत रूप वाली भाषा।
17 पदनाम	किसी पद या कार्य का नाम।

क्रमांक	शब्दकोष	
18	गद्यांश	गद्य का अंश या भाग, सामान्यतः अनुच्छेद के रूप में।
19	अशुद्धि	भाषा या लेखन में की गई गलती।
20	संशोधन	किसी त्रुटि को सुधारने की प्रक्रिया।

MATS UNIVERSITY

MATS CENTRE FOR DISTANCE AND ONLINE EDUCATION

UNIVERSITY CAMPUS: Aarang Kharora Highway, Aarang, Raipur, CG, 493 441

RAIPUR CAMPUS: MATS Tower, Pandri, Raipur, CG, 492 002

T : 0771 4078994, 95, 96, 98 **Toll Free ODL MODE :** 81520 79999, 81520 29999

Website: www.matsodl.com